RNI No UPHIN/2015/65982

₹10

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

वर्ष : 12 अंक : 05 01-15 मार्च 2026

संगठित हो हिन्दू समाज

ये कहाँ जा रहे हम.....

लखनऊ में एक युवक द्वारा अपने पिता की वीभत्स ढंग से की गयी हत्या ने पूरे समाज को अन्दर तक झकझोर दिया है। हमें सोचने पर विवश कर दिया है कि जो हमारी परिवार व्यवस्था पूरी दुनिया में आदर्श मानी जाती थी, भोगवाद के चलते आज कहाँ से कहाँ पहुँचती जा रही है। पिता-पुत्र, भाई-भाई, भाई-बहन, सास-बहू आदि परम्परागत रिश्तों में कटुता बढ़ रही है। यह अच्छा संकेत नहीं है। भारत में परिवार को लम्बे समय से समाज की सबसे मजबूत इकाई माना गया है। संयुक्त परिवारों की परम्परा, आपसी सहयोग, बुजुर्गों का मार्गदर्शन और भावनात्मक सुरक्षा के लिये सभी भारतीय सामाजिक ढाँचे की पहचान रहे हैं, लेकिन बदलते समय के साथ परिवारों की संरचना और सम्बन्धों में तेज बदलाव आये हैं। आज परिवारों का बिखरना एक गम्भीर सामाजिक चुनौती बनता जा रहा है, जिसके कारणों, प्रभावों और समाधान पर गम्भीर विचार आवश्यक है। सबसे बड़ा कारण तेज शहरीकरण और आर्थिक दबाव है। रोजगार और बेहतर जीवन की तलाश में लोग छोटे शहरों और गाँवों से महानगरों की ओर पलायन कर रहे हैं। सीमित आवास, लम्बा कार्य समय और प्रतिस्पर्धी जीवनशैली के कारण परिवारों के लिये एक साथ रहना कठिन हो गया है। परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवारों में बदल रहे हैं, जहाँ आपसी संवाद और भावनात्मक जुड़ाव कम होता जा रहा है।

एक अन्य महत्वपूर्ण कारण जीवन मूल्यों और प्राथमिकताओं में बदलाव है। आधुनिक जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, करियर और आत्मकेन्द्रित सोच को अधिक महत्व मिलने लगा है। विवाह को आजीवन जिम्मेदारी के बजाय व्यक्तिगत सन्तुष्टि से जोड़कर देखा जाने लगा है। छोटे मतभेद भी बड़े टकराव में बदल जाते हैं क्योंकि धैर्य, सहनशीलता और समर्पण जैसे गुणों का अभ्यास कम होता जा रहा है। सोशल मीडिया और डिजिटल दुनिया ने भी रिश्तों को सतही बना दिया है। लोग साथ रहते हुए भी भावनात्मक रूप से दूर हो रहे हैं। परिवारों के बिखरने का प्रभाव केवल दम्पतियों तक सीमित नहीं रहता बल्कि बच्चों और बुजुर्गों पर इसका गहरा असर पड़ता है। बच्चों में असुरक्षा, तनाव और व्यवहार सम्बन्धी समस्यायें बढ़ती हैं। उन्हें स्थिर भावनात्मक वातावरण नहीं मिल पाता, जिससे उनका मानसिक विकास प्रभावित होता है। वहीं बुजुर्ग अकेलेपन और उपेक्षा का शिकार होते हैं। पारिवारिक सहारा कमजोर पड़ने से सामाजिक एकता भी प्रभावित होती है। इस चुनौती से निपटने के लिये बहुस्तरीय प्रयास आवश्यक हैं।

सबसे पहले परिवार के स्तर पर संवाद को मजबूत करना होगा। मतभेदों को दबाने के बजाय खुले मन से बातचीत, एक-दूसरे की भावनाओं को समझना और समझौते की भावना विकसित करना जरूरी है। परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे के लिये समय निकालना चाहिये, चाहे जीवन कितना ही व्यस्त क्यों न हो। शिक्षा प्रणाली में भी पारिवारिक और नैतिक मूल्यों को स्थान दिया जाना चाहिये। बच्चों को बचपन से ही सहयोग, सम्मान, जिम्मेदारी और सहनशीलता जैसे गुण सिखाये जायें। विवाह पूर्व और बाद में परिवार परामर्श जैसी व्यवस्थायें भी रिश्तों को मजबूत बनाने में सहायक हो सकती हैं। सरकार और समाज की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। कार्यस्थलों पर परिवार-अनुकूल नीतियाँ, जैसे लचीला कार्य समय और अवकाश की सुविधायें, पारिवारिक सन्तुलन बनाये रखने में मदद कर सकती हैं। साथ ही सामुदायिक गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और पड़ोस आधारित सहयोग से सामाजिक जुड़ाव बढ़ाया जा सकता है। अन्ततः, परिवार को बचाना केवल परम्परा का संरक्षण नहीं, बल्कि एक स्वस्थ और सन्तुलित समाज की आवश्यकता है। यदि हम आधुनिकता और मूल्यों के बीच सन्तुलन बना पायें, तो बिखरते परिवारों को फिर से जोड़ना सम्भव है। मजबूत परिवार ही सशक्त समाज की नींव होते हैं, और इस नींव को बचाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।। ●

समाज जागरण का शंखनाद

अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12 अंक : 05

RNI. No. UPHIN/2015/65982

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

सम्पादक

शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल

डॉ. अनूप आनन्द

सुरेश सिंह

विवेक रॉय

मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय

संस्कृति भवन

राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल

avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ दूरभाष +91- 6389500007, 9151522252 से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर लखनऊ से प्रकाशित।

अनुक्रम

संगठित हो हिन्दू समाज : डॉ. भागवत 04

सात्विक चेतना और राष्ट्रीयता के कवि राम... 08

'ब्रेवहार्ट सावरकर' सेक्युलर केसरिया ज्वाला... 09

परिवर्तनशील समाज में 'कुटुम्ब व्यवस्था' 10

एआई का अध्ययन समय की माँग 11

वाराणसी की दालमण्डी का चौड़ीकरण अभियान 12

रंगों में रची-बसी आध्यात्मिक व सामाजिक... 13

गाँव, किसान और खेती के लिए खुला खजाना 14

लखनऊ विश्वविद्यालय को अशान्त करने ... 15

सुभाषित

छायामन्यस्य कुर्वन्ति, तिष्ठन्ति स्वयमातपे।
फलान्यपि परार्थाय, वृक्षाः सत्पुरुषा इव॥

वृक्ष स्वयं धूप में खड़े रहते हैं परन्तु अन्य लोगों को छाया प्रदान करते हैं। वृक्षों के फल भी परोपकार के लिये होते हैं। इसलिये वृक्ष सत्पुरुषों जैसे हैं।।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

Scan & Subscribe

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या : 02510210002360

आई एफएससी : UCBA0000251

यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता	₹ 200
12 वर्षीय सदस्यता	₹ 1000
आजीवन सदस्यता	₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।

हिन्दुओं की घटती जनसंख्या पर सरसंघचालक ने जतायी चिन्ता

संगठित हो हिन्दू समाज : डॉ. भागवत

• घुसपैठियों को डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट करना होगा

हिन्दू समाज को संगठित और सशक्त होने की आवश्यकता है। हमको किसी से खतरा नहीं है, लेकिन सावधान रहना है। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत ने लखनऊ के निराला नगर स्थित सरस्वती शिशु मन्दिर में सामाजिक सद्भाव बैठक में बोलते हुए कही। आरएसएस के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में चल रहे कार्यक्रमों की कड़ी में लखनऊ आये डॉ. भागवत ने हिन्दुओं की घटती जनसंख्या पर चिन्ता जताते हुए लालच और जबरदस्ती हो रहे मतान्तरण पर रोक लगाने की बात की। उन्होंने कहा कि घर वापसी का काम तेज होना चाहिये। जो लोग हिन्दू धर्म में लौटें, उनका ध्यान भी हमें रखना होगा।

बढ़ती घुसपैठ पर चिन्ता जताते हुए उन्होंने कहा कि घुसपैठियों को डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट करना होगा। उन्हें रोजगार नहीं देना है। उन्होंने कहा कि हिन्दुओं के कम से कम तीन बच्चे होने चाहिये। वैज्ञानिकों के हवाले से उन्होंने कहा कि जिस समाज में औसतन तीन से कम बच्चे होते हैं, वह समाज भविष्य में समाप्त हो जाता है। यह बात हमारे परिवारों में नव दम्पतियों को बतायी जानी चाहिये। डॉ. भागवत ने कहा कि विवाह का उद्देश्य सृष्टि आगे चले, यह होना चाहिये, वासना पूर्ति नहीं। इसी भावना से कर्तव्य बोध आता है।

सद्भाव बढ़ाने की जरूरत

उन्होंने कहा कि सद्भाव न रहने से भेदभाव होता है। हम सभी एक देश, एक मातृभूमि के पुत्र हैं। मनुष्य होने के नाते हम सब एक हैं। एक समय भेद नहीं था, लेकिन समय चक्र के चलते भेदभाव की आदत पड़ गयी है, जिसे दूर करना होगा। उन्होंने कहा कि सनातन विचारधारा सद्भाव की विचारधारा है। जो विरोधी हैं, उन्हें मिटाना है, ऐसा हम नहीं मानते। एक ही सत्य सर्वत्र है। इस दर्शन को समझ कर आचरण में लाने से भेदभाव समाप्त होगा।

नियमित हों सद्भाव की बैठकें

डॉ. भागवत ने समाज की सज्जन शक्ति का आह्वान करते हुए कहा कि बस्ती स्तर पर सामाजिक सद्भाव से जुड़ी बैठकें नियमित होनी चाहिये। हम आपस में मिलेंगे तो भ्रम दूर होंगे। इस प्रकार की बैठकों में रूढ़ियों से मुक्त होने पर चर्चा होनी चाहिये। जो समस्यायें सामने आयें, उनको दूर करने का प्रयास होना चाहिये। जो दुर्बल है, उनकी सहायता करना चाहिये। जातियाँ झगड़े का कारण नहीं बनना चाहिये। समाज में अपनेपन का भाव होगा तो इस तरह की समस्या नहीं होगी।

मातृशक्ति परिवार का आधार

सरसंघचालक जी ने कहा कि घर-परिवार का आधार मातृशक्ति है। हमारी परम्परा में कमायी का अधिकार पुरुषों को था लेकिन खर्च कैसे हो, यह मातायें तय करती थीं। मातृशक्ति विवाह के बाद दूसरे घर में आकर सभी को अपना बना लेती हैं। महिला को हमें अबला नहीं मानना है, वह असुर मर्दिनी है। हमने स्त्री प्रकृति की जो कल्पना की, वह बलशाली है। महिलाओं को आत्म संरक्षण का प्रशिक्षण होना चाहिये। पश्चिम में महिलाओं का स्तर पत्नी से है, हमारे यहाँ उन्हें माता माना जाता है। हमारी संस्कृति में उनका सौन्दर्य नहीं, वात्सल्य देखा जाता है।

विदेशी शक्तियों के प्रति चेताया

उन्होंने कहा कि अमेरिका और चीन जैसे देशों में बैठे कुछ लोग हमारी सद्भावना के विरुद्ध योजना बना रहे हैं। इससे हमें सावधान रहना होगा। एक दूसरे के प्रति अविश्वास समाप्त करना होगा। एक दूसरे के दुख-दर्द में शामिल होना होगा। डॉ. भागवत जी ने कहा कि भारत निकट भविष्य में विश्व को मार्गदर्शन देगा। विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान भारत के पास ही है।

चिरतरुण संगठन है संघ

सरसंघचालक मोहन जी भागवत ने कहा कि आज भारतीय ज्ञान परम्परा को सभी जगह माना जाता है। यह विषय हमें अपने बच्चों को बताना चाहिये। तब उन्हें समझ में आयेगा कि हम क्या हैं। उन्होंने आगे कहा कि संघ चिरतरुण संगठन है और भारत के सबसे अधिक युवा संघ के पास हैं।

सभी हिन्दुओं के लिये खुले हों मन्दिर, कुआँ और श्मशान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा है कि मन्दिर कुआँ और श्मशान सभी हिन्दुओं के लिए खुले होने चाहिये और उनमें कोई भेदभाव नहीं होना चाहिये। सरसंघचालक निराला नगर स्थित सरस्वती विद्या मन्दिर के माधव सभागार में कार्यकर्ता कुटुम्ब मिलन कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि हमें अपने बच्चों को बताना होगा कि करियर क्या है? पेट भरना, ज्यादा कमाना, उपभोग करना करियर नहीं है। करियर कमाने से ज्यादा बाँटने में है। बच्चों को ऐसी शिक्षा दें जो अमीर होकर दान दें, दूसरों के लिये जीना सीखें। घरों में ऐसे संस्कार देने होंगे जिनके अनुसार बच्चे यह समझें कि हमारा हित ही देश के साथ है। मेरे लिये मेरा देश ही पहले है। विद्या और धन अपने देश के लिये कमाना चाहिये।

सारे हिन्दू समाज को एक मानता है संघ

सरसंघचालक ने कहा कि सामाजिक समरसता के लिये व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर प्रयास होने चाहिये। संघ सारे हिन्दू समाज को एक मानता है। इसलिए हमें व्यक्तिगत स्तर पर और पारिवारिक स्तर पर आपसी मेलजोल बढ़ाना चाहिये। सामाजिक समरसता भाषण से नहीं, बल्कि आचरण से आयेगी। संघ के कुटुम्ब में जात-पात नहीं है। ऐसा ही समाज में करना होगा।

सरसंघचालक ने कहा कि संघ पुस्तकें पढ़ने की अपेक्षा स्वयंसेवक को देखने से अधिक समझ में आता है।

समाज की इकाई व्यक्ति नहीं परिवार

डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि समाज की इकाई व्यक्ति नहीं परिवार है। सामाजिक व्यवहार का परीक्षण परिवार में होता है। बचत करना हमारे परिवारों की आदत में है। देश का धन हमारे घरों में रहता है। हमें सुनिश्चित करना चाहिये कि बच्चों को मातृभाषा ठीक से आये। हमारे अन्दर देशभक्ति, प्रामाणिकता, अनुशासन और कुटुम्ब गौरव का भाव होना चाहिये।

बस्ती व शाखा में हो कुटुम्ब मिलन

डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि 100 से 70 की संख्या में कुटुम्ब मिलन बस्ती और शाखा स्तर पर होने चाहिये। हमें अभाव में नहीं रहना है लेकिन किसी के प्रभाव में भी नहीं आना है। जैसा संघ है वैसा ही हमारा जीवन होना चाहिये। पंच परिवर्तन कार्यक्रमों में मातृशक्ति की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है।

हिन्दुस्थान हिन्दू राष्ट्र है

उन्होंने ने अपने उद्बोधन में आगे कहा कि हिन्दुस्थान हिन्दू राष्ट्र है, हम सभी हिन्दू अपने सहोदर हैं। समाज में जो भी वर्ग संघ के निकट नहीं है, संघ कार्यकर्ताओं को उनके निकट जाना चाहिये। उनसे आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध विकसित करने चाहिये। वह सम्बन्ध चौराहे से शुरू होकर कुटुम्ब तक विस्तृत हों। सब अपने हैं, हमें यह मानकर व्यवहार करना है।

स्क्रीन का समय निश्चित हो

डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि हम तकनीक रोक नहीं सकते लेकिन उपयोग अनुशासन में रहकर हो। कितने समय तक क्या देखना है, यह निर्धारित होना चाहिये। विज्ञान एआई, टीवी, मोबाइल और फिल्मों की हानियाँ भी बताता है। नयी पीढ़ी को यह सब बताना चाहिये।

अंग्रेजों ने जो बिगाड़ा उसे ठीक करना होगा : डॉ. भागवत

शिक्षा और स्वास्थ्य मूलभूत आवश्यकता है। यह व्यवसाय का काम नहीं हो सकता है। यह सबके लिए सुलभ होना चाहिये। ये बातें सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत ने लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में आयोजित शोधार्थी संवाद कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि पश्चिम के लोगों ने शिक्षा के साथ खिलवाड़ किया। हमारी शिक्षा व्यवस्था हटाकर अपनी थोपी, जिससे उन्हें काम करने के लिए अंग्रेजी बाबू मिल जायें। अंग्रेजों ने जो बिगाड़ा उसको ठीक करना होगा।

संघ का लक्ष्य भारत को परम वैभव सम्पन्न बनाना

सरसंघचालक जी ने कहा कि संघ का कार्य देश को परम वैभव सम्पन्न बनाना है। मैं और मेरा परिवार, यह न सोचकर पूरे देश के लिये सोचना होगा। संघ समाज की एकता और गुणवत्ता की चिन्ता करता है। संघ को समझना है तो संघ के अन्दर आकर कर देखिये।

संघ को पढ़कर नहीं समझा जा सकता है। संघ सम्पूर्ण हिन्दू समाज को संगठित करने का एक ही काम करता है। संघ किसी के विरोध मे नहीं है। संघ को लोकप्रियता, प्रभाव और शक्ति नहीं चाहिये।

शोध की भूमिका महत्वपूर्ण

भारत की दिशा और दशा बदलने में शोध की बड़ी भूमिका है। सत्य परक बातें सामने आनी चाहिये। अज्ञानता से भारत को हम समझ ही नहीं पायेंगे। सरसंघचालक जी ने शोधार्थियों से कहा कि जो भी शोध करें उसे उत्कृष्ट रूप से, प्रामाणिकता पूर्वक, तन-मन-धन से, निःस्वार्थ भाव से देश के लिये करें। संघ को लेकर बहुत दुष्प्रचार होता है। शोधार्थियों को सत्य सामने लाना चाहिये।

बाजारीकरण खतरनाक

वैश्वीकरण पर बात करते हुए डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि यह कोई बहुत बड़ी चुनौती नहीं है। आज वैश्वीकरण का मतलब बाजारीकरण से है, जो खतरनाक है। यह हमारे लिये महत्वपूर्ण नहीं है। हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करते हैं यानी पूरे विश्व को अपना परिवार मानते हैं। जब तक सब सुखी नहीं होंगे, एक भी व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता है, इसलिये हमारा जीवन संयमित होना चाहिये, उपभोगवादी नहीं होना चाहिये। संयम, त्याग का जीवन हमारे संस्कृति आत्मबोध में है। पश्चिमी देशों ने जड़वाद फैलाया। उन देशों की सोच है कि बलशाली बनकर खुद जियो और बाकी को छोड़ दो, जो बाधक बने उन्हें मिटा दो। यही काम आज अमेरिका, चीन कर रहे हैं, लेकिन आज दुनियाभर की समस्याओं के प्रश्नों का उत्तर भारत के पास है। विश्व गुरु बनना है, तो सभी क्षेत्रों में शक्तिशाली बनाना होगा। दुनिया तभी मानती है जब सत्य के पीछे शक्ति हो।

धर्म निरपेक्ष कुछ भी नहीं

सरसंघचालक जी ने कहा कि धर्म का शाश्वत स्वरूप सदैव प्रासंगिक है। सृष्टि जिन नियमों से चलती है वह धर्म है। धूल का एक भी कण धर्मनिरपेक्ष नहीं हो सकता है। धर्म सबको सुख पहुँचाता है। हमारी सभी बातों में धर्म लागू है। आचरण धर्म, देश, काल के अनुसार बदलता रहता है। धर्म बताता है कि हमें अकेले नहीं सबके साथ जीना है।

पर्यावरण संरक्षण में योगदान दें

पर्यावरण के विषय पर सरसंघचालक मोहन भागवत जी ने कहा कि पर्यावरण के प्रति हम लोगों को मित्र भाव से जीवन को जीना चाहिये। पेड़ लगाना, पानी बचाना, प्लास्टिक का प्रयोग न करना जैसे कार्य पर्यावरण संरक्षण में सहायक हो सकते हैं। हमें आधुनिक तकनीक का भी पर्यावरण संरक्षण में उपयोग करना चाहिये।

सामाजिक समरसता एकता का आधार : डॉ. भागवत

हिन्दू धर्म ही सच्चा मानव धर्म है। दुनिया में पंथ निरपेक्षता वाला कोई समाज है तो वह हिन्दू समाज है। संघ का काम देश के लिये है। अनेक जाति, पंथ सम्प्रदाय बताने से अच्छा है कि हम सब अपनी पहचान हिन्दू माने। सामाजिक समरसता समाज में एकता का आधार है। ये बातें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने लखनऊ के इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित प्रमुख जन गोष्ठी में कहीं। उन्होने कहा कि जाति, भाषा की पहचान महत्वपूर्ण नहीं हैं। हम सब हिन्दू है, यह भाव रखना होगा। जाति नाम की व्यवस्था धीरे-धीरे जा रही है। तरुण पीढ़ी के आचरण में यह दिख रहा है। संघ में किसी की जाति नहीं पूछी जाती है। सब हिन्दू सहोदर हैं, इस भाव से काम करते हैं। समाज से जाति को मिटाने के लिये जाति को भुलाना होगा। समाज में जिस दिन जाति-पाति को महत्व नहीं मिलेगा, उस दिन जाति पर राजनीति करने वाले नेता भी बदल जायेंगे।

बच्चों को घर में ही दें धर्म की शिक्षा

उन्होने कहा कि दूर-दूर रहने वाले परिवार भावनात्मक रूप से जुड़े रह सकते हैं। हमें अपने बच्चों को नाते रिश्तेदारों, सम्बन्धियों से मिलाते रहना चाहिये। परिवारों को वर्ष मे एक बार कुल परम्परा परिवार के संस्कार के निर्वहन के लिए एकत्रित होना चाहिये। इससे परिवारों में पीढ़ियों का जुड़ाव बना रहता है। एक अच्छे परिवार से अच्छे समाज का निर्माण होता है। उन्होने संयुक्त परिवारों में हो रहे विघटन के सन्दर्भ में कहा कि आधुनिकता हमारी रगों में है लेकिन हम पश्चिमीकरण के विरोधी हैं। उन्होने कहा कि हम अपने बच्चों को पहले घर मे ही धर्म की शिक्षा दें। धन का प्रदर्शन करने की परम्परा हमारी नहीं रही है। संयुक्त परिवार में संस्कारों का वास होता है।

भक्तों के हाथ में होना चाहिये मन्दिरों का नियंत्रण

मन्दिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कराने के सवाल पर सरसंघचालक ने कहा कि हम भी यह चाहते हैं कि मन्दिरों का नियंत्रण भक्तों के हाथों में हो। धर्माचार्य और सज्जन लोग मिलकर मंदिरों का संचालन करें। लेकिन इसके लिये हमें तैयारी करनी होगी। विश्व हिन्दू परिषद इस दिशा में काम कर रहा है। मन्दिरों का पैसा राष्ट्रहित व हिन्दू कल्याण में लगना चाहिये।

व्यक्ति निर्माण करता है संघ

उन्होंने कहा, संघ व्यक्ति का निर्माण करता है। संघ की कार्यपद्धति में देने की बात है,लेने की नहीं। इसलिये हमारे समर्पित कार्यकर्ताओं में निराशा नहीं आती। अपने प्रयासों से अनेक गाँवों को विकसित करने का काम संघ ने हाथ में लिया है। देश में पाँच हजार गाँवों को संघ ने विकास के लिये चयनित किया है। जिसमें से 333 गाँव अच्छे बन गये हैं। ऐसे गाँवों में जहाँ कुछ नही था, वहाँ ग्राम वासियों ने 12वीं तक विद्यालय बना दिये। गाँव में कोई मुकदमा नहीं हैं। भूमिहीन किसानों को भूमि मिली है। गाँव में ही रोजगार सृजित किया है। इससे गाँव के किसानों की उन्नति हुई है।

हम किसी देश से नहीं दबेंगे

एक सवाल के जवाब में सरसंघचालक ने कहा कि भारत एक दिन ग्लोबल साउथ का नेतृत्व करेगा। हम किसी देश से नहीं दबेंगे, खड़े रहेंगे। कुछ दिन बाद सबकुछ सामान्य हो जायेगा। भारत की अर्थव्यवस्था पूँजीपतियों और बैंको के हाथों में नहीं, हमारे घरों मे है। भारत के पास इतना सामर्थ्य है कि वह दबाव सहन करके भी आगे बढ़ सकता हैं। उन्होंने सज्जन शक्ति से आह्वान किया कि उन्हें किसी न किसी समाज परिवर्तन के प्रकल्प से जुड़कर काम करना चाहिये। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को जानने के लिये संघ की शाखा में आयें और संघ को जाने। संघ की शाखा में आना सम्भव न हो तो संघ से जुड़े कार्यक्रमों में आयें। अगर यह भी सम्भव नहीं हो सकता है, तो वे किसी न किसी सामाजिक गतिविधि से जुड़े। ●

अभिषेक प्रजापति

सात्विक चेतना और राष्ट्रीयता के कवि राम प्रसाद शर्मा 'महर्षि'

कवि राम प्रसाद शर्मा 'महर्षि'

हिन्दी साहित्य के आकाश में कई ऐसे दीप्यमान नक्षत्र हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से न केवल समाज को दिशा दिखायी, बल्कि भारतीय संस्कृति की जड़ों को भी सींचा। इन्ही में से एक महत्वपूर्ण नाम है गोण्डा के रहने वाले कवि राम प्रसाद शर्मा 'महर्षि' का। 'महर्षि' उपनाम उनके व्यक्तित्व की सात्विक गहरायी और विचारों की शुचिता को दर्शाता है। वे एक ऐसे रचनाकार थे जिन्होंने अध्यात्म, राष्ट्रप्रेम और समाज सुधार को अपनी कविताओं का केन्द्र बनाया। राम प्रसाद शर्मा 'महर्षि' हिन्दी काव्यधारा के उन सन्त-स्वभाव कवियों में गिने जाते हैं जिनकी कविता में सात्विक चेतना, आध्यात्मिक अनुशासन और राष्ट्रीयता का उज्ज्वल संगम दिखायी देता है। वे केवल भावुक राष्ट्रगायक नहीं थे, बल्कि आत्मसंयम, नैतिकता और सांस्कृतिक अस्मिता के कवि थे। उनके काव्य में राष्ट्र प्रेम किसी राजनीतिक नारे की तरह नहीं, बल्कि आत्मा की साधना की तरह उपस्थित होता है।

'मातृभूमि की वन्दना में,
शब्द नहीं, जीवन हो,
सेवा में तेरे अर्पित
हर श्वास और हर स्पन्दन हो।
त्याग तपस्या से सिंचित हो
यह धरती का आँगन,
मानवता की ज्योति जगे,
यही राष्ट्र का वन्दन हो।'

इन पंक्तियों में स्पष्ट है कि उनके लिये राष्ट्रभक्ति कोई क्षणिक आवेग नहीं बल्कि दीर्घ साधना है। वे मनुष्य को बाहरी संघर्ष से पहले आत्मसंघर्ष का योद्धा बनाना चाहते हैं। उनके काव्य में एक सन्त का धैर्य और एक देशभक्त का उत्साह साथ-साथ चलता है।

उनकी सात्विक चेतना का मूल स्रोत भारतीय दार्शनिक परम्परा है- वह परम्परा जिसमें आत्मा की पवित्रता और कर्म की निष्कामता को सर्वोच्च माना गया है। 'महर्षि' की कविताओं में यह विश्वास बार-बार उभरता है कि व्यक्ति का आन्तरिक शुद्धिकरण ही समाज और राष्ट्र के उत्थान का आधार बन सकता है। वे बाहरी परिवर्तन से अधिक भीतरी परिवर्तन पर बल देते हैं। उनके लिए सच्ची क्रान्ति मन की भूमि पर घटित होती है जो कि उनकी पंक्तियों में देखा जा सकता है-

'जला स्वयं को दीप बन,
तम का अंश मिटा दे तू,

राष्ट्र नहीं केवल भूखण्ड, चेतन स्वर बना दे तू।
मन की मैली धूल झाड़, सत्य-व्रत धारण कर ले,
अपने भीतर के भारत को पहले उजियारा दे तू।'

राष्ट्रीयता उनके काव्य का केन्द्रीय तत्व है, किन्तु यह संकीर्ण या उग्र राष्ट्रवाद नहीं है। उनकी राष्ट्रीयता सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों से परिपोषित है। वे भारतभूमि को केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवन्त चेतना के रूप में देखते हैं। उनकी कविताओं में मातृभूमि के प्रति गहरी श्रद्धा और समर्पण का भाव मिलता है। यह समर्पण त्याग, तपस्या और सेवा के आदर्शों से जुड़ा हुआ है।

'उठो धरा के वीर तुम,
नया विहान माँगता,
लहू का अर्घ्य आज फिर,
ये हिन्दुस्तान माँगता।
न झुकने पाए शीश यह,
न रुकने पाये पग कभी,
अजेय राष्ट्र के लिए,
महान प्राण माँगता।'

महर्षि जी की भाषा सरल, ओजस्वी और भावपूर्ण है। वे अलंकारों की जटिलता में नहीं उलझते, बल्कि सीधे हृदय को स्पर्श करने वाली शैली अपनाते हैं। उनकी पंक्तियों में नैतिक दृढ़ता और आत्मबल की प्रेरणा मिलती है। वे युवाओं को आत्मसंयम, परिश्रम और राष्ट्रहित के लिये समर्पण का सन्देश देते हैं। उनकी कविता में एक गुरु का स्वर है- जो मार्ग दिखाता है, प्रेरित करता है और अनुशासन सिखाता है। उनके काव्य में प्रकृति और संस्कृति का सुन्दर सामंजस्य भी दिखायी देता है। वे प्रकृति को ईश्वर की सृष्टि और मानव के नैतिक जीवन का सहचर मानते हैं। राष्ट्रप्रेम उनके लिए प्रकृति, संस्कृति और मानवता के प्रति प्रेम का ही विस्तार है। इस प्रकार उनकी राष्ट्रीयता व्यापक और समावेशी है।

समग्रतः राम प्रसाद शर्मा 'महर्षि' सात्विकता, नैतिकता और राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं। उनकी कविता हमें यह सिखाती है कि राष्ट्र का निर्माण केवल बाहरी शक्ति से नहीं, बल्कि अन्तःकरण की पवित्रता से होता है। आज के समय में, जब मूल्य संकट और विभाजन की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, उनकी सात्विक राष्ट्रीयता हमें आत्मचिन्तन और समरसता का मार्ग दिखाती है। उनकी काव्यधारा भारतीय आत्मा की उजली लकीर है- जो व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र को प्रकाशित करती है।

‘ब्रेवहार्ट सावरकर’ सेक्युलर केसरिया ज्वाला के संरक्षक

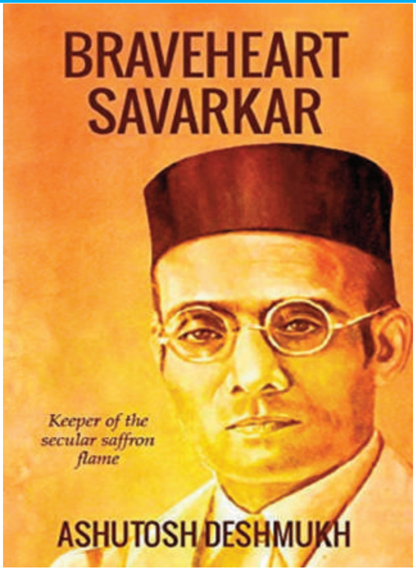

लेखक	:	आशुतोष देशमुख
प्रकाशक	:	द राइट प्लेस (2019)

यह पुस्तक विनायक दामोदर सावरकर को समर्पित है, जिनका जीवन बौद्धिक जिज्ञासा और सत्य की खोज के लिये समर्पित था। लेखक ने सावरकर के जीवन, विचारों और विरासत का व्यापक विवरण प्रस्तुत किया है। पुस्तक सात भागों में विभाजित है, जिनमें सावरकर के जीवन के विभिन्न चरणों और विचारों को प्रस्तुत किया गया है-

भाग I : क्रान्तिकारी आरम्भ (1883-1906)

सावरकर का जन्म 1893 में महाराष्ट्र के भगूर में हुआ था। वे बचपन से ही तर्कशील और उत्साही पाठक थे। चापेकर भाइयों की फाँसी ने उन्हें स्वतंत्रता के लिये प्रेरित किया। उन्होंने कई देशभक्त समूहों की स्थापना की और 1906 में छात्रवृत्ति पर लन्दन गये।

भाग II : विदेश में क्रान्तिकारी (1906-1911)

लन्दन में सावरकर ने बार परीक्षा पास की, ‘Indian War of Independence’ लिखी, और फ्री इण्डिया सोसाइटी की स्थापना की। उनकी गतिविधियों के कारण ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और आजीवन कारावास की सजा दी।

भाग III : काला पानी (1911-1924)

अंडमान की जेल में सावरकर ने अमानवीय यातनाएँ झेली। कई वर्षों के सन्घर्ष के बाद उन्हें रत्नागिरि में नजरबन्द रखा गया।

भाग IV : सामाजिक सुधारक (1924-1937)

रत्नागिरि में रहते हुए सावरकर ने जाति व्यवस्था के खिलाफ अभियान चलाया और अपनी पुस्तकों के माध्यम से सामाजिक सुधार का प्रयास किया। 1937 में उन्हें बिना शर्त रिहा कर दिया गया।

भाग V : राजनीतिक नेता (1937-1947)

सावरकर हिन्दू महासभा के अध्यक्ष बने, लेकिन संगठन प्रमुख राजनीतिक शक्ति नहीं बन सका। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता देखी, हालांकि विभाजन का दर्द भी सहा।

भाग VI : अन्तिम वर्ष और विरासत (1948-1966)

गांधी हत्या के आरोप में सावरकर को दोषी नहीं पाया गया। उनकी सम्पत्ति कभी वापस नहीं मिली। 1966 में उन्होंने स्वेच्छा से मृत्यु को गले लगाया।

भाग VII : मिथक और वास्तविकता

सावरकर का हिन्दुत्व भूगोल, रक्त और संस्कृति पर आधारित था। उन्होंने इस्लाम की सकारात्मक उपलब्धियों को स्वीकार किया और भारतीय मुसलमानों को हिन्दुओं के अधिक निकट बताया। वे पैन-इस्लामिज़्म के विरोधी थे।

सावरकर विद्वान, बैरिस्टर, बहुभाषी, लेखक और कवि थे। उनकी पुस्तक ‘Indian War of Independence 1857’ क्रान्तिकारियों के लिये प्रेरणा बनी। उन्होंने जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिये कार्य किया। उनका हिन्दुत्व रक्षात्मक था, हिन्दुओं को एकजुट करने के लिये, न कि अल्पसंख्यकों पर हमला करने के लिये। सावरकर के आलोचक उन्हें समझ नहीं पाये, जबकि अनुयायियों ने कई बार उनके आदर्शों से समझौता किया। 21वीं सदी में उनके विचारों का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है। ●

घोषणा पत्र

फार्म-4 नियम-8

समाचार पत्र का नाम -	अवध प्रहरी
समाचार पत्र की पंजीकरण संख्या -	UPHIN/2015/65982
भाषा -	हिन्दी
प्रकाशन की अवधि -	पाक्षिक
प्रकाशक का नाम -	शम्भू दयाल पुरवार
राष्ट्रीयता -	भारतीय
पता -	संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर पूर्व, लखनऊ, उ.प्र.
मुद्रक का नाम -	शम्भू दयाल पुरवार
राष्ट्रीयता -	भारतीय
पता -	संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर पूर्व, लखनऊ, उ.प्र.
सम्पादक का नाम -	शिवबली विश्वकर्मा
राष्ट्रीयता -	भारतीय
पता -	संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर पूर्व, लखनऊ, उ.प्र.
प्रकाशन स्थल -	संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर पूर्व, लखनऊ, उ.प्र.
मुद्रण स्थल -	नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन राजेन्द्र नगर पूर्व, लखनऊ, उ.प्र.-226004
स्वामी का नाम -	भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति

मैं **शम्भू दयाल पुरवार** प्रकाशक/मुद्रक **‘अवध प्रहरी’** घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

दिनाँक : 01 मार्च 2025

शम्भू दयाल पुरवार
प्रकाशक/मुद्रक

◆ मुकुल कानितकर

परिवर्तनशील समाज में 'कुटुम्ब व्यवस्था'

भारत एक ऐसा देश है जहाँ परिवार केवल सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि जीवन का मूलाधार है। भारतीय समाज की आत्मा कुटुम्ब व्यवस्था है, जो व्यक्ति को पहचान, सुरक्षा, संस्कार और आत्मीयता प्रदान करती है। वैश्वीकरण और तकनीकी क्रान्ति के दौर में जहाँ पश्चिमी समाजों में परिवार विखण्डित होता गया, वहीं भारत में कुटुम्ब व्यवस्था ने न केवल स्वयं को सुरक्षित रखा, बल्कि समयानुसार अपने रूप और साधनों में भी परिवर्तन स्वीकार किया।

आज भी हर भारतीय परिवार से गहरे सम्बन्धों के साथ जीता है। मोबाइल और डिजिटल माध्यमों को भले ही सामाजिक सम्बन्धों के क्षरण का कारण कहा जाता है, परन्तु यही तकनीक परिवार को जोड़ने का सबसे मजबूत साधन भी बनी है। स्मार्टफोन मिलते ही लोग सबसे पहले परिवार का व्हाट्सऐप समूह बनाते हैं। विवाहित व्यक्तियों के मायके, ससुराल, ननिहाल और ददिहाल के अलग-अलग समूह इसकी मिसाल हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि परिवार नष्ट नहीं हुआ; बल्कि नये रूपों में विस्तार पा रहा है।

भारतीय संस्कृति में सम्बन्धों की भाषा ही परिवार का विस्तार है। यहाँ किसी अजनबी को भी 'भाई साहब', 'बहन जी', 'ताई', 'माँ' जैसे सम्बोधनों से पुकारा जाता है। यह सम्बोधन केवल औपचारिक नहीं, बल्कि सामाजिक आत्मीयता के प्रतीक हैं। यही सांस्कृतिक ताना-बाना परिवार को सुरक्षित रखता है इसलिये यह मान लेना कि भारत में परिवार टूट रहे हैं, वास्तविकता से दूर है।

तकनीक और परिवार : बिखराव नहीं, विस्तार

कोविड महामारी के कालखण्ड ने यह सिद्ध किया कि भारतीय परिवार भावनात्मक सुरक्षा की दृष्टि से विश्व में सर्वोच्च है। अमेरिका में रहने वाले छात्र तक प्रतिदिन वीडियो कॉल के माध्यम से अपने माता-पिता से जुड़े रहे। ज़ूम पर सुन्दरकाण्ड या हनुमान चालीसा का पाठ किया गया, पारिवारिक संवाद निरन्तर चलता रहा। यानी तकनीक दूरी मिटाने लगी, दूरी बढ़ाने का कारण नहीं बनी।

यही कारण है कि भारत का युवा, जो क्वांटम कम्प्यूटर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग का नागरिक है, पारिवारिक मूल्यों को न केवल समझता है बल्कि नवाचार के साथ उसे निभाता भी है।

पश्चिम में परिवार का संकट और भारत की भूमिका

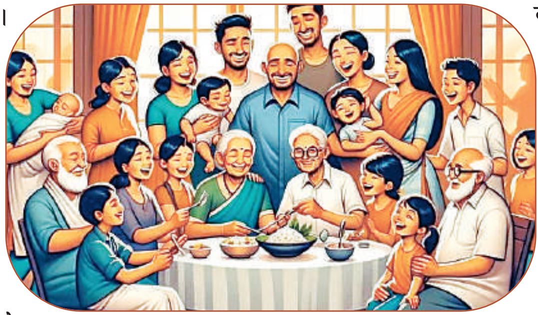

पश्चिमी देशों ने आर्थिक समृद्धि और जीडीपी वृद्धि के नाम पर परिवारों की अनदेखी की। परिणाम यह हुआ कि अमेरिका में 'फादरलेसनेस' यानी पिता-विहीनता एक गम्भीर समस्या बन गयी। डॉ. डेविड ब्लैंकनहॉर्न जैसे समाजशास्त्रियों ने 'फादरलेस अमेरिका' जैसी पुस्तकों के माध्यम से चेतावनी दी कि परिवार का टूटना अमेरिका की सामाजिक समस्याओं की जड़ है। वहाँ आज सरकार तलाक ना लेने पर टैक्स में रियायत देती है- यह परिवार बचाने का कृत्रिम प्रयास है।

भारत इस सन्दर्भ में विश्व को मार्गदर्शन दे सकता है, क्योंकि भारतीय समाज ने परिवार को कभी बोझ नहीं, बल्कि शक्ति माना। इसी कारण भारतीय विश्व भर में सफल हो रहे हैं- क्योंकि वे परिवार की भावनात्मक पूँजी से सशक्त होते हैं।

भारतीय कुटुम्ब व्यवस्था : संस्कृति का आधार

परिवार भारतीय सभ्यता की रीढ़ है। विद्यालयों और संस्थानों में भी 'विद्यालय परिवार' या 'संस्थान परिवार' कहा जाता है। यह परिवार-केन्द्रित दृष्टि केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक एकता का तंत्र है। रामायण का सन्दर्भ स्पष्ट करता है कि परिवार में कर्तव्य सर्वोपरि है। वनगमन के समय माता कौशल्या ने राम को 'सुरक्षित रहना' नहीं कहा, बल्कि धर्म पालन का आशीर्वाद दिया क्योंकि धर्म ही रक्षा कर सकता है। यही परिवार का सार है- कर्तव्य, त्याग और निरन्तर देना। आज तकनीक के कारण मित्र-परिवार बढ़े हैं। विवाह की आयु बढ़ी है, माता-पिता बनने की प्रक्रिया विलम्बित हुई है, फिर भी भारतीय युवा धीरे-धीरे समझ रहे हैं कि बिना बच्चों के परिवार पूर्ण नहीं होता। 'डबल इनकम नो किड' जैसी अवधारणाओं से मोहभंग हो रहा है, क्योंकि अन्ततः जीवन की अर्थवत्ता परिवार और बच्चों से ही बनती है।

भविष्य के संरक्षक युवा व मातृशक्ति

भारत में परिवार के पुनर्जागरण का श्रेय युवा शक्ति और मातृशक्ति दोनों को जाता है। आज इसरो, आईसीएसआर, शिक्षा और प्रशासन- हर क्षेत्र में महिलाएँ तेज़ी से आगे बढ़ रही हैं। जहाँ कभी कन्या भ्रूण हत्या की घटनाएँ होती थीं, वहीं हरियाणा व बिहार में आज महिलाओं की भागीदारी सर्वाधिक है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि आने वाली शताब्दी मातृशक्ति की होगी। आज यह कथन सत्य सिद्ध हो रहा है। भारतीय मातृशक्ति न केवल परिवार को बल्कि संस्कृति और राष्ट्र को भी सुरक्षित रखेगी। परिवर्तनशील समाज में भारतीय कुटुम्ब व्यवस्था न तो कमजोर हुई है, न विस्थापित-वरन् आधुनिक साधनों के साथ और अधिक विस्तारित, सशक्त एवं लचीली हुई है। परिवार भारतीय संस्कृति की धुरी है, और वहीं भारत को विश्वगुरु के मार्ग पर आगे ले जाती है। परिवार की रक्षा करने की नहीं, परिवार के कर्तव्यों को निभाने की आवश्यकता है। यही भारत की स्थायी शक्ति है और यही भविष्य का मार्ग भी। ●

सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर में कम्प्यूटर लैब व वेबसाइट का लोकार्पण

एआई का अध्ययन समय की माँग

लखनऊ। राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल ने लखनऊ स्थित सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर में नव निर्मित कम्प्यूटर लैब एवं विद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने ने कहा कि नन्हे-मुन्ने बच्चे देश का भविष्य हैं और उन्हें प्रारम्भिक आयु से ही शिक्षा, संस्कार और अनुशासन प्रदान करना विद्यालयों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि विद्या भारती इस दायित्व का निर्वहन प्रभावी ढंग से कर रहा है। भारतीय संस्कृति, परम्परा, रामायण, महाभारत और हमारे ऋषि-मुनियों के वैज्ञानिक योगदान की जानकारी बच्चों को घर और विद्यालय दोनों स्थानों पर दी जानी चाहिये।

उन्होंने कहा कि आधुनिक शिक्षा और आर्टिफिशियल इन्टेलिजेंस का अध्ययन समय की आवश्यकता है, लेकिन इसके साथ ही हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को भी सँजोकर रखना होगा। कम्प्यूटर लैब और वेबसाइट की शुरुआत को उन्होंने डिजिटल शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने विश्वास जताया कि इससे विद्यार्थियों को नयी तकनीकों से जुड़ने और ज्ञान के दायरे को विस्तृत करने में मदद मिलेगी।

अपने सम्बोधन में राज्यपाल ने गुजरात में विद्या भारती के विद्यालयों में कराये गये विकास कार्यों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि बाल्यावस्था में बच्चों की ग्रहणशीलता अत्यन्त तीव्र होती है। शोध बताते हैं कि आठ वर्ष तक की आयु में दिये गये संस्कार और शिक्षा का उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिये परिवार और विद्यालय, दोनों को सकारात्मक वातावरण तैयार करना चाहिये।

उन्होंने आंगनबाड़ी केन्द्रों को बच्चों के लिये आकर्षण का केन्द्र बनाने पर भी बल दिया। 'केजी टू पीजी' की अवधारणा के तहत आंगनबाड़ी केन्द्रों को विश्वविद्यालयों से जोड़ने के अपने प्रयासों का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि जनसहयोग से इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। प्रदेश में लगभग 50 हजार से अधिक आँगनबाड़ी केन्द्रों को किट उपलब्ध करायी जा चुकी हैं, जिससे बच्चों की उपस्थिति और रुचि में वृद्धि हुई है।

कार्यक्रम में विद्यालय प्रबन्धन, अभिभावक और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

90 सेंकेड में फल-सब्जी की सेहत बता देगा एआई

कानपुर। आम जनमानस के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस अब हर घर के किचन में सब्जियों और फलों की सेहत भी मात्र 90 सेकेण्ड में बता देगा। फल सब्जी के टुकड़े को स्कैन करने पर पेस्टीसाइड के विवरण के साथ कीटनाशक व उससे स्वास्थ्य पर होने वाले असर का पता चल जायेगा। आईआईटी कानपुर में इनक्यूबेटैड स्टार्टअप स्कैनएक्स्ट की टीम ने पोर्टेबल डिवाइस को एनआईआर एमअबाईआर स्पेक्टोस्कोपी व आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस मशीन

लर्निंग के साथ जोड़कर यह नवाचार किया है।

यह निकट इनफ्रारेड यानी 750-2500 की उच्च ऊर्जा के साथ फल सब्जी की आंतिरक परत तक जाकर उसके अन्दर मिले तत्वों का पता लगाती है। मध्य इन्फ्रारेड 2.5-10 माइक्रोमीटर क्षेत्र को मिलाकर किसी तरह की हानिकारक गैसों या कीटनाशक का पता लगाने मे मदद करती है। दोनो तकनीकों का संयोजन करने से नमूनों के व्यपक, तेज व गैर विनाशकारी रासायनिक विश्लेषण करने मे मदद मिलती है। टीम ने इस डिवाइस का पेटेन्ट भी कराया है, जो किसानों से लेकर आम घरों तक सभी के प्रयोग में लायी जा सकेगी। इसे 2026 के अन्त तक बाजार में उतारने की तैयारी है। एक बार जाँच करने पर 10 से 15 पैसे खर्च आयेगा। एक डिवासइ कम से कम पाँच वर्ष तक कार्य करेगी। इसके बाद सर्विस कराकर फिर प्रयोग में लायी जा सकेगी।

इस कार्य में स्टार्टअप के फाउण्डर रजत वर्धन के अनुसार फल व सब्जियों में कीटनाशक की उपस्थिति वर्तमान में सबसे कम है। प्रतिदिन लोग फल सब्जी का प्रयोग स्वयं को स्वस्थ रखने के लिये करते है लेकिन जब खरीद रहे होते है तब यह तय नहीं रहता कि वास्तव में इससे शरीर को कितना लाभ मिलने वाला है। इसकी वजह फल -सब्जियों के उत्पादन में अन्धाधुँध कीटनाशकों का उपयोग है।

वाराणसी की दालमण्डी का चौड़ीकरण अभियान

वाराणसी। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम तक सुगम मार्ग बनाने के लिये वाराणसी के दालमण्डी इलाके में चौड़ीकरण का कार्य जनसमर्थन, सहयोग व कहीं-कहीं राजनैतिक विरोध के बाद भी प्रगति पर है। दालमण्डी चौड़ीकरण अभियान के अन्तर्गत 181 भवनों को नोटिस जारी कर ध्वस्तीकरण की कार्यवाई शुरू हुई। दालमण्डी में भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच जर्जर घोषित मकानों को भी तोड़ने का काम चल रहा है। पहली बार दालमण्डी आने-जाने वाले सभी रास्तों को बन्द कर दिया गया और नगर निगम व लोकनिर्माण विभाग की टीमों ने 21 जर्जर मकानों में से 20 को तोड़ने की कार्रवाई शुरू की। इसके अलावा 14 अन्य मकानों को भी तोड़ने की कार्यवाई जारी रही। मकानों की छत और ऊपरी हिस्से मजदूरों ने तोड़े जबकि एक मंजिला या ऊपर से क्षतिग्रस्त मकानों को बुलडोजर से गिराया गया। कार्रवाई के दौरान कई महिलाएँ घरों से बाहर निकल आयीं लेकिन पुलिस ने समझाकर उन्हें कार्रवाई स्थल से दूर रखा।

कार्रवाई शुरू होने से पहले एक मकान मालिक द्वारा अपने ही मकान के छज्जे पर लटक रहे तिरपाल पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगाने की घटना के बाद सुरक्षा के भारी इंतजाम किये गये थे, जिसमें 500 से अधिक पुलिस, पीएसी, आरएएफ और सीआरपीएफ जवानों की तैनाती की गयी। पूरे इलाके की ड्रोन कैमरे से लगातार निगरानी की जा रही है। जिन छतों पर एक साथ अनेक लोग खड़े दिखे उन्हें हटाया गया। कार्रवाई के दौरान पुलिस व प्रशासन की टीमें लाउडस्पीकर से लोगों को घरों के अन्दर रहने की अपील करती रहीं।

नयी सड़क से चौक थाने तक दालमण्डी सड़क को 17.5 मीटर चौड़ा किया जाना है। इसकी जद में आये 187 मकानों में से नगर निगम ने 21 को जर्जर घेषित किया था। एसीपी दशाश्वमेध डॉ. अतुल त्रिपाठी ने बताया कि स्थानीय निवासियों को वैकल्पिक रास्तों से आवागमन की अनुमति दी गयी है।

कार्रवाई में बाधा डालने वालों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि विरोध करने वाले अधिकांश लोग किरायेदार हैं और नियमों के अनुसार किरायेदारों को मुआवजा देने का कोई प्रावधान नहीं है।

जरूरी है दालमण्डी का चौड़ीकरण

अति व्यस्त और संवेदनशील व्यापारिक क्षेत्र जहाँ प्रतिदिन हजारों की संख्या में स्थानीय लोग, पर्यटक और श्रद्धालु आते हैं। संकरी सड़क के कारण प्रतिदिन जाम लग जाता है। आपात सेवाओं की आवाजाही में समस्या होती है। यह मार्ग श्रीकाशी विश्वनाथ धाम, नयी सड़क और चौक को जोड़ता है।

दालमण्डी में सड़क की चौड़ायी कई स्थानों पर 6 से 8 फीट ही है। चौड़ीकरण के बाद इसे 17.5 मीटर यानी 55 फीट तक चौड़ा करने की योजना है। इससे धाम जाने वाले पैदल यात्रियों को राहत मिलेगी। एम्बुलेंस दमकल और पुलिस की आवाजाही तथा व्यापारिक गतिविधियों को व्यवस्थित करने में मदद मिलेगी।

श्रद्धालुओं की बढ़ती भीड़ को देखते हुए लिया गया निर्णय

श्री काशी विश्वनाथ धाम के विस्तारीकरण के साथ श्रद्धालुओं की संख्या मे कई गुना वृद्धि हो गयी है। मैदागिन से गौदोलिया मार्ग पर दिनभर जाम की स्थिति रहती है। बढ़ती भीड़ को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रशासन और लोक निर्माण विभाग को वैकल्पिक मार्ग तलाशने को कहा। ऐसे में निर्णय लिया गया कि दालमण्डी सड़क चौड़ी कर मैदागिन -गौदोलिया मार्ग पर वाहनों का दबाव कम किया जा सकता है।

लगभग 215 करोड़ की लागत से दालमण्डी में 650 मीटर लम्बी सड़क बनेगी। ध्वस्तीकरण के दायरे में आने वाले सभी मकान व दुकान मालिकों को उचित मुआवजा भी मिल रहा है। एडीसीपी गौरव बंसवाल ने बताया कि शुरुआत में प्रवेश स्थल पर पुरानी दुकानें तोड़ी जा रही हैं। गली में जेसीबी का प्रवेश मुश्किल है इसलिये हथौड़ों व ड्रिल मशीनों से ही दुकानें तोड़ी जा रही हैं। दालमण्डी सड़क की चौड़ायी 60 फीट होगी और इसमें 30 फीट की सड़क होगी। 15 फीट के दोनों तरफ फुटपाथ तैयार किये जायेंगे। इसे आदर्श मॉडल के रूप में विकसित किया जायेगा। इसका उद्देश्य बाबा विश्वनाथ के दरबार तक पहुँचाने के लिये श्रद्धालुओं के लिए एक अलग रास्ता तैयार करना है, जिससे कि भक्तों की भीड़ को नियंत्रित किया जा सके। इसके साथ ही यहाँ पर पर्यटन कॉरिडोर विकसित किया जायेगा।

पहले यह 15 मीटर ही चौड़ा किया जाना था किन्तु बाद में उसे 17.5 मीटर कर दिया गया है। इस सड़क पर दिल्ली के पालिका बाजार जैसा बड़ा कपड़े व इलेक्ट्रानिक का मार्केट है। नयी सड़क से लेकर चौक तक के पूरे रास्ते के आसपास अल्पसंख्यक आबादी अधिक है और यही कारण है कि सपा, बसपा व कांग्रेस आदि दल ध्वस्तीकरण की कार्यवाही के प्रति लोगों को मुआवजे के नाम पर भड़काने का प्रयास कर रहे हैं, किन्तु वह सफल नही हो सके, क्योंकि अभी तक जितनी भी कार्यवाई हुई है, वह विधिसम्मत ही हुई है।

रंगों में रची-बसी आध्यात्मिक व सामाजिक समरसता

"होली खेले रघुवीरा अवध में..."- यह लोकधुन केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारतीय आस्था और संस्कृति का जीवन्त चित्र है। अवध की धरती, जहाँ भगवान राम ने अवतार लिया, वहाँ की होली भक्ति और मर्यादा का अद्भुत संगम मानी जाती है। फागुन के महीने में जब अबीर-गुलाल उड़ता है, तो मानो पूरा अवध राममय हो जाता है। इसी रंगोत्सव का आध्यात्मिक विस्तार है रंग पञ्चमी, जो होली के पाँचवें दिन मनायी जाती इस उत्सव को और गहरायी प्रदान करती है।

होली का आरम्भ होलाष्टक से होता है। फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक के आठ दिन। इन दिनों को आत्मसंयम, साधना और भक्ति का समय माना गया है। इसके बाद होलिका दहन होता है, जो भक्त प्रह्लाद की अटूट श्रद्धा और सत्य की विजय का प्रतीक है। होली को "माता" कहे जाने का एक अर्थ यह भी है कि इस पर्व ने प्रह्लाद को संरक्षण दिया, धर्म और आस्था की रक्षा की।

उत्तर प्रदेश में होली केवल एक दिन का पर्व नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक त्रिकोण है- काशी, मथुरा और अवध।

काशी की होली आध्यात्मिक उन्मुक्तता का प्रतीक है। महाश्मशान में बसी बाबा भोले की नगरी में होली की परम्परा जीवन और मृत्यु के बीच के भेद को मिटाकर अद्वैत का सन्देश देती है।

मथुरा और वृन्दावन की होली राधा-कृष्ण की लीलाओं से ओत-प्रोत है- लट्ठमार होली, फूलों की होली और फाग उत्सव भक्ति और प्रेम का अनुपम उदाहरण हैं।

वहीं अवध की होली, रामभक्ति और लोकसंस्कृति का संगम है। लोकगीतों में इसकी छटा झलकती है -

"होली खेले रघुवीरा अवध में..."

"अरे खेले मसाने में दिगम्बर... होरी..."

"फागुन आयो रे, उड़े रंग गुलाल..."

यह त्रिकोण केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक है। काशी शिव की नगरी, मथुरा कृष्ण की लीला-भूमि और अवध राम की जन्मभूमि- तीनों देवस्थल जहाँ ईश्वर ने अपने विविध रूपों में प्रकट होकर धर्म और प्रेम का सन्देश दिया। इन तीनों स्थलों की होली हमें यह सिखाती है कि भक्ति के रंग अलग-अलग हो सकते हैं, पर उद्देश्य एक ही है- मानवता का उत्थान।

रंग पञ्चमी का महत्व इस सन्दर्भ में और बढ़ जाता है। मान्यता है कि इस दिन रंगों के माध्यम से वातावरण की नकारात्मकता दूर होती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह पर्व केवल बाहरी रंगों का नहीं, बल्कि मन के भीतर के विकारों को धोने का अवसर है। जब समाज के विभिन्न

वर्ग, जाति और धर्म के लोग एक-दूसरे को रंग लगाते हैं, तो भेदभाव की दीवारें स्वतः गिर जाती हैं।

> वर्तमान समय में, जब समाज कई प्रकार के विभाजनों से गुजर रहा है, होली का सन्देश अत्यन्त प्रासंगिक है। परिवारों में बढ़ती दूरियाँ, समाज में बढ़ता वैमनस्य- इन सबके बीच होली प्रेम और अपनत्व का सेतु बनती है। कुटुम्ब के लोग साथ बैठकर पकवान बनाते हैं, बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते हैं और गिले-शिकवे भुलाकर गले मिलते हैं। इससे पारिवारिक एकता सुदृढ़ होती है और समाज में सौहार्द बढ़ता है।

छुआछूत, जात-पात और ऊँच-नीच जैसी कुरीतियों को मिटाने में भी होली का विशेष योगदान है। रंग सबको एक समान कर देते हैं- न कोई बड़ा, न छोटा। यही इस पर्व का मूल सन्देश है कि हम सब एक ही ईश्वर की सन्तान हैं।

अन्ततः रंग पंचमी और होली हमें यह सिखाती हैं कि जीवन के सच्चे रंग प्रेम, भक्ति और समरसता में हैं। काशी की आध्यात्मिकता, मथुरा की प्रेम-लीला और अवध की रामभक्ति- इन तीनों के संगम से होली केवल उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति का जीवन्त दर्शन बन जाती है। आइए, इस फागुन हम केवल चेहरे नहीं, बल्कि दिल भी रंगें- प्रेम, आस्था और एकता के रंगों से। ●

गाँव, किसान और खेती के लिए खुला खजाना

उत्तर प्रदेश सरकार ने वित्त वर्ष 2026-27 के बजट में प्रदेश के गाँवों व किसानों को खुशहाल बनाने के लिए खजाना खोल दिया है। इस बजट में कृषि योजनाओं के लिये 10,888 करोड़ रुपये स्वीकृत किये गये हैं जो विगत वर्ष की तुलना में 20 प्रतिशत अधिक है। स्पष्ट कि सरकार इस बार बीज से बाजार तक किसानों का साथ देने जा रही है। बजट की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से फसलों की गुणवत्ता, उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ सरकार किसानों को उद्यम, प्रसंस्करण व बाजार से भी जोड़ना चहती है।

उत्पादों को ब्राण्ड बनाने और निर्यात के नये मार्ग भी खोलने का भी सरकार का प्रयास है। एग्री एक्सपोर्ट हब, विश्व स्तरीय हैचरी व प्रशिक्षण केन्द्र और बुन्देलखण्ड एक्सीलेंस सेन्टर ऑन रेसिलिएंट एग्रीकल्चर (जलवायु अनुकूल कृषि केन्द्र) स्थापित किया जायेगा। सरकार इजरायली तकनीक पर 16 हाईटैक नर्सरी सीडलिंग उत्पादन इकाइयों की स्थापना भी करने जा रही है। उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण के लिये 2,832 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी है। यह विगत वित्तीय वर्ष की तुलना में सात प्रतिशत अधिक है। वित्तीय वर्ष में 753.55 लाख टन खाद्यान्न तथा 48.18 लाख टन तिलहन उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं।

प्राकृतिक खेती पर बल

बुन्देलखण्ड तक सीमित प्राकृतिक खेती का विस्तार सम्पूर्ण प्रदेश में करने की योजना है। सरकार ने प्राकृतिक कृषि राष्ट्रीय मिशन के अन्तर्गत 298 करोड़ का बजट तय किया है। योजना के अन्तर्गत 94,300 हेक्टेयर क्षेत्र में रसायन मुक्त खेती करायी जायेगी।

सोलर पम्पों पर बड़ा निवेश

किसानों को ऊर्जा संकट से राहत देने के लिये सरकार ने डीजल पम्पों को सोलर पम्प में बदलने की योजना के लिये 637.84 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। वहीं निजी नलकूपों को लगातार बिजली आपूर्ति के लिये 2,400 करोड़ रुपये दिये गये हैं।

प्रदेश में बनेंगे पाँच सीड पार्क

प्रदेश में राजधानी लखनऊ समेत पाँच स्थानों पर सीड पार्क विकसति किये जायेंगे। लखनऊ में निर्माण कार्य आरम्भ हो चुका है शेष पार्कों के लिये सरकार ने 251 करोड़ रुपये का बजट रखा है। इससे गुणवत्ता पूर्ण बीज उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। प्रदेश सरकार ने पण्डित दीनदयाल किसान समृद्धि योजना के लिये 103 करोड़ रुपये जारी किये हैं। मुख्यमंत्री जोखिम प्रबन्धन एवं पशु बीमा योजना के लिये 50 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। किसान उत्पादन संगठनों के लिए 75 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

यूपी के बजट में किसानों के दोनों हाथों में लड्डू

- कृषि योजनाओं के लिए 10,888 करोड़
- निजी नलकूपों को निर्बाध बिजली आपूर्ति के लिए 2400 करोड़
- छुट्टा गोवंश के रख-रखाव के लिए 2,000 करोड़

सिंचाई सुविधाएँ और बाढ़ नियंत्रण

सरकार ने किसानों को बेहतर सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध कराने और बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षा उपाय सुनिश्वित करने के लिये इस बार बजट में 18,290 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। इस राशि से बाढ़ नियंत्रण परियोजनाओं के साथ नहरों के रख रखाव और निर्माणाधीन सिंचाई परियोजनाओं को पूरा किया जायेगा।

गोवंश संरक्षण के लिये खोला खजाना

पशुपालन क्षेत्र को मजबूत करने के लिये बजट में पूर्व से संचालित योजनाओं को और गति देने का फैसला किया है। निराश्रित गोवंश संरक्षण और रख रखाव के लिये 2,000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है जबकि बड़े गो-संरक्षण केन्द्रों की स्थापना के लिए 100 करोड़ रुपए प्रस्तावित हैं। स्मरणीय है कि गोवंश प्राकृतिक कृषि का एक महत्वपूर्ण अंग है। पशु स्वास्थ्य सेवाओं को सुदढ़ करने के लिये धन आवंटित किया गया है जिसमें पशु रोग नियंत्रण योजना के लिये 253 करोड़ रुपये तथा पशु चिकित्सालयों और पशु सेवा केन्द्रों के आधुनिकीकरण के लिये 155 करोड़ रुपये आवंटित किये गये है। ●

धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत को मिला पर्याप्त धन

प्रदेश में योगी सरकार बनने के बाद से सनातन संस्कृति का व्यापक विकास हो रहा है। अयोध्या में दिव्य-भव्य राम मन्दिर निर्माण व प्रतिवर्ष दीपोत्सव के आयोजन काशी विश्वनाथ कॉरिडोर व विन्ध्याचल कॉरिडोर के निर्माण व एक जिला एक पर्यटन स्थल के विकास जैसी योजनाओं के चलते धर्मध्वजा लहरा रही है। अब उसी सनातन परम्परा को और विस्तृत करने के लिये धार्मिक स्थलों पर श्रद्धालुओं की गंगा बहाने का संकल्प दोहराया गया है। सरकार ने हिन्दुत्व की धार तेज रखने का सन्देश दिया है। बजट में माँ विन्ध्यवासिनी मन्दिर, माँ अष्टभुजा मन्दिर, माँ काली खोह मन्दिर की परिक्रमा एवं जनसुविधा के लिये 200 करोड़ का बजट सुनिश्चित किया गया है। संरक्षित मन्दिरों के जीर्णोद्धार के लिये 100 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है। तीर्थ विकास परिषद अयोध्या क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये 150 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

इसी प्रकार नैमिषारण्य तीर्थ विकास परिषद को सौ करोड़ का बजट दिया गया है। हिन्दुत्व और सनातन के शक्ति स्थल के रूप में उभरे ब्रज क्षेत्र को भी धन आवंटित किय गया है। विन्ध्यवासिनी धाम और वाराणसी में पर्यटकों की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए सौ करोड़ रुपये का प्रबन्ध किया गया है। सरकार ने सांस्कृतिक, धार्मिक धरोहरों के पुनरुत्थान पर भी ध्यान दिया गया है। बजट के प्रावधानों से यह तो तय है कि इस बार भी अयोध्या में भव्य दीपोत्सव तो ब्रज में भी भव्य रंगोत्सव का आयोजन किया जायेगा।

लखनऊ विश्वविद्यालय को अशान्त करने की कोशिश

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय को एक बार फिर अशान्त करने की कोशिश की गयी। प्रशासन के स्पष्ट मना करने के बावजूद 22 फरवरी को कुछ अराजक तत्वों ने जबरन लाल बारादरी के बाहर नमाज पढ़कर रोजा इफ्तार किया। समाजवादी छात्र सभा, एनएसयूआई और आइसा के सदस्य लाइन से खड़े होकर उनका संरक्षण करते नजर आये। इसके बाद लाल बारादरी को जीर्णोद्धार के चलते बन्द किये जाने के विरोध में धरने पर बैठ गये। इसके जवाब में अगले दिन जीर्णोद्धार का समर्थन कर रहे छात्रों ने हनुमान चालीसा का पाठ किया और 'हर-हर महादेव' के जयकारे लगाये।

पुलिस के अनुसार, कुछ छात्र लाल बारादरी के पास पहुँचे और जबरन नमाज अदा करने की कोशिश की। बाद में वे कैंटीन के सामने सड़क पर बैठकर विरोध-प्रदर्शन करने लगे। इन गतिविधियों से विश्वविद्यालय का शैक्षणिक माहौल प्रभावित हुआ और परिसर में चल रहे निर्माण कार्य में बाधा आयी। हालात को देखते हुए पुलिस ने शान्ति भंग की आशंका में सम्बन्धित छात्रों से पर्सनल बॉण्ड भरवाने की कार्रवाई शुरू की। विश्वविद्यालय परिसर शिक्षा, शोध और व्यक्तित्व निर्माण का केन्द्र होना चाहिये, न कि स्वार्थपरक राजनीति का मंच। लाल बारादरी से जुड़ा यह प्रकरण परिसर में विभाजनकारी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने की एक और घटना के रूप में सामने आया है।

एलयू प्रशासन के मुताबिक, 22 फरवरी को लाल बारादरी के गेट को सील कर बैरिकेडिंग लगाये जाने के विरोध में नारेबाजी और प्रदर्शन हुआ। 24 फरवरी को, प्रशासनिक रोक के बावजूद नमाज अदा करने के मामले में हसनगंज पुलिस की चालान रिपोर्ट के आधार पर 13 छात्रों को नोटिस जारी किये गये। प्रत्येक से 50-50 हजार रुपये के निजी मुचलके भरने के निर्देश दिये गये। महानगर कमिश्नरेट का आरोप है कि सम्बन्धित छात्रों ने निर्माण कार्य में बाधा पहुँचाने की कोशिश की और नारेबाजी से तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हुई।

जर्जर अवस्था में है इमारत

प्रशासन के अनुसार, भवन की खराब स्थिति को देखते हुए यहाँ संचालित बैंक और कैंटीन पहले ही बन्द किये जा चुके थे। हाल में दीवार का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त होने के बाद सुरक्षा कारणों से इसे सील किया गया और फेंसिंग कर आवाजाही रोकी गयी। विरोध की आशंका को देखते हुए कुलसचिव भावना मिश्र ने हसनगंज थाना प्रभारी को पहले ही सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने के लिये पत्र भेजा था। फेंसिंग के विरोध में कुछ मुस्लिम छात्रों तथा कांग्रेस और समाजवादी पार्टी से जुड़े छात्र संगठनों ने सामूहिक नमाज और इफ्तार का आयोजन किया।

लाल बारादरी का इतिहास

लाल बारादरी विश्वविद्यालय परिसर की एक ऐतिहासिक इमारत है, जिसका निर्माण उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में अवध के नवाबी काल में हुआ था। यह बादशाह बाग परिसर का हिस्सा थी, जिसे नवाब नसीरुद्दीन हैदर के समय विकसित किया गया। बारह द्वारों वाली इस संरचना को इसी विशेषता के कारण 'बारादरी' कहा गया। लाल रंग की बाहरी बनावट और नवाबी शैली इसे अलग पहचान देती है। विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद बादशाह बाग क्षेत्र परिसर में शामिल हुआ और लाल बारादरी भी उसकी परिसम्पत्ति बन गयी।

प्रशासनिक निर्णय और विवाद

यह मामला मूल रूप से सुरक्षा से जुड़ा प्रशासनिक निर्णय था, किन्तु इसके विरोध में इसे मजहबी रंग देने का प्रयास किया गया, जिससे शैक्षणिक वातावरण प्रभावित हुआ। किसी भी जर्जर भवन के आसपास सुरक्षा प्रबन्ध करना सामान्य प्रक्रिया है। यदि ऐसे निर्णयों को भावनात्मक आधार पर चुनौती दी जायेगी, तो संस्थागत अनुशासन और प्रशासनिक विश्वसनीयता पर असर पड़ना स्वाभाविक है।

विश्वविद्यालय प्रशासन का कहना है कि परिसर में किसी भी प्रकार की अराजकता के लिये स्थान नहीं होना चाहिये। छात्रहित और सुरक्षा से जुड़े निर्णयों का पालन करना सभी की जिम्मेदारी है।

आस्था से आत्मनिर्भरता तक : मथुरा के जैत गाँव की तुलसी माला परम्परा

मथुरा का जैत गाँव केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि जीवन्त आस्था और श्रम की अद्भुत परम्परा का केन्द्र है। यहाँ तुलसी के पौधों की सूखी लकड़ियाँ कारीगरों के हाथों से गुजरकर पवित्र तुलसी माला का रूप लेती हैं और हजारों परिवारों के जीवन में आजीविका की सुगन्ध भरती हैं। हर माला में केवल मनकों की शृंखला नहीं, बल्कि भक्ति, धैर्य और समर्पण का सूत्र पिरोया जाता है- जो सीधे श्रीकृष्ण की सेवा और श्रद्धा से जुड़ता है।

यह परम्परा ब्रज की आध्यात्मिक धरोहर को सहेजते हुए स्थानीय समुदाय को आत्मनिर्भर बना रही है और आस्था को रोजगार से जोड़ने का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

राष्ट्रीय युवा संसद में यूसीसी पर हुआ मंथन

लखनऊ। डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में 'युवराष्ट्र' के नेतृत्व में 'राजनीति शास्त्र एवं लोक प्रशासन विभाग' द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय युवा संसद का आयोजन विश्वविद्यालय के आर्टिफिशियल लिंब सेंटर में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं में लोकतांत्रिक मूल्यों, संसदीय प्रक्रियाओं, शासन व्यवस्था, वाद-विवाद, निर्णय क्षमता और अनुशासन की समझ विकसित करना रहा।

युवा संसद में प्रतिभागियों ने सांसदों की भूमिका निभाते हुए समान नागरिक संहिता (यूजीसी) पर पक्ष-विपक्ष में विस्तृत चर्चा की। सदन की कार्यवाही के दौरान गृह मंत्री की भूमिका निभा रहे प्रतिभागी ने यूजीसी पर प्रस्ताव प्रस्तुत किया। तीखी बहस और तर्क-वितर्क के बाद मतदान कराया, जिसमें बहुमत से समान नागरिक संहिता विधेयक पारित कर दिया गया।

प्रथम दिन उद्घाटन सत्र में उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री सतीश चन्द्र शर्मा ने युवाओं का उत्साहवर्धन किया। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र संपर्क प्रमुख मनोज जी ने 'एक विधान, एक संविधान और एक कानून' की अवधारणा पर जोर दिया। विशिष्ट अतिथि

प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र देते राष्ट्रधर्म के निदेशक मनोजकान्त जी व लखनऊ की पूर्व मेयर संयुक्ता भाटिया जी।

महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव ने युवाओं से सक्रिय राजनीति में भागीदारी का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति आचार्य प्रो. संजय सिंह ने की और लोकतंत्र को सशक्त बनाने में युवाओं की भूमिका पर बल दिया।

दूसरे दिन मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री के सलाहकार एवं आईएएस अवनीश अवस्थी ने संविधान पढ़ने और उसका पालन करने की आवश्यकता बतायी। विशिष्ट अतिथि बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राजकुमार ने ऐसे आयोजनों को लोकतांत्रिक समझ के लिये आवश्यक बताया। समापन सत्र में पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सदस्य डॉ. दिनेश शर्मा ने कहा कि युवा संसद राष्ट्र निर्माण की प्रयोगशाला है।

मुख्य वक्ता मनोजकान्त ने संविधान की प्रस्तावना, संवैधानिक उद्देश्यों और सामाजिक कुरीतियों पर प्रकाश डालते हुए UCC की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में प्रो. सी.के. दीक्षित, प्रो. ममता यादव, प्रो. अश्विनी कुमार दुबे सहित कई शिक्षकों ने विचार साझा किए। अतिथियों का स्वागत कुलपति, कुल सचिव रोहित सिंह और उप कुल सचिव अनिल कुमार मिश्रा ने किया।

कार्यक्रम में लखनऊ विश्वविद्यालय, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय और भाषा विश्वविद्यालय के 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सचिन मिश्रा (गिरिराज सिंह की भूमिका), द्वितीय हर्षित प्रजापति (अखिलेश यादव की भूमिका) और तृतीय पायल यादव (शाम्भवी चौधरी की भूमिका) को मिला। विजेताओं को मेडल, ट्रॉफी और प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। ●

'द केरल स्टोरी-2': समाज की छिपी परतों को उजागर करती फिल्म

लखनऊ। 'जो ताकत मुहब्बत में है, वो बारूद में नहीं। काफिर लड़की सिर्फ एक लड़की नहीं होती है, वह एक पोटेंशियल फैमिली ट्री होती है, उसे वहाँ से तोड़कर, अपने साथ जोड़ लो तो आने वाली पूरी नस्ल बदल जाती है।' केरल स्टोरी-2 का यह संवाद उन कथित लोगों की मानसिकता को दर्शाने की कोशिश करता है, जो नाम और पहचान बदलकर पहले प्रेमजाल बुनते हैं, विवाह करते हैं और बाद में दबाव व ब्लैकमेल के जरिये अपनी मंशा पूरी करते हैं।

कई विवादों और कानूनी प्रक्रिया के बाद फिल्म द केरल स्टोरी-2 सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है। फिल्म में लव-जिहाद की वास्तविक घटनाओं को केन्द्र में रखते हुए यह दिखाया गया है कि किस तरह पढ़ी-लिखी युवतियों को प्यार, शादी और सुनहरे भविष्य के झाँसे में फँसाकर धर्मांतरण के लिए मजबूर किया जाता है।

फिल्म की कहानी

फिल्म की कहानी केरल, मध्य प्रदेश और राजस्थान की तीन लड़कियों के इर्द-गिर्द घूमती है। यूपीएससी की तैयारी कर रही केरल की सुरेखा (उल्का गुप्ता) को पत्रकार बनने का नाटक करने वाले कन्वर्जन गिरोह का सलीम (सुमित गहलावत) अपने प्यार के जाल में फँसाता है। मध्य प्रदेश की नेहा (ऐश्वर्या ओझा), जैवलिन के खेल में नेशनल खेलने की तैयारी में है, उसे फैजान (अर्जन सिंह औजला) अपना झूठा नाम राजू बताकर प्यार का झाँसा देता है। वहीं राजस्थान की 16 साल की डाँसिंग इंफ्लूएंसर दिव्या (अदिति भाटिया) को फालोवर्स बढ़ाने का लालच देकर राशिद (युक्ताम खोसला) निकाह कर लेता है। तीनों का ही धर्मांतरण कर उन्हें इस्लाम अपनाने के लिये कहा जाता है। नेहा, नफिसा बन जाती है, दिव्या, आलिया और सुरेखा बन जाती है सलमा। फिल्म में दिखाया गया है कि किस तरह भावनात्मक रूप से कमजोर क्षणों का लाभ उठाकर लड़कियों का ब्रेनवॉश किया जाता है। निकाह और धर्मांतरण के बाद होने वाले अत्याचारों के दृश्य दर्शकों को झकझोरते हैं।

अभिनय और तकनीकी पक्ष

तीनों अभिनेत्रियों ने अपने किरदारों में भावनात्मक उतार-चढ़ाव को प्रभावी ढंग से निभाया है। कुल मिलाकर, फिल्म समाज में व्याप्त साजिशों को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करती है और अभिभावकों को सतर्क रहने का सन्देश देती है।

कैसे करें फलों की बागवानी

मार्च महीना फसलों के कृषि कार्य के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके अलावां केला, लीची, पपीता की भी बागवानी कुछ किसान करते हैं। अतः किसानों द्वारा निम्न कृषि कार्यों पर ध्यान देने की आवश्यकता है :

आम एवं लीची

इस समय आम एवं लीची के नये बागों में जो बाग अभी फलन में नहीं आने वाले हो उनके पेड़ों के आस-पास चारों तरफ घास-फूस, पुआल या पॉलीथीन की मल्चिंग को हटा कर हल्की जुतायी-गुड़ायी करके पेड़ की उम्र के अनुसार खाद एवं उर्वरको का प्रयोग करना चाहिये। यदि पेड़ एक वर्ष का है, तो उसमे 50-55 ग्राम डाइअमोनियम फॉस्फेट, 85 ग्राम यूरिया एवं 75 ग्राम म्यूरेट ऑफ़ पोटाश एवं 5 किग्रा खूब अच्छी तरह से सड़ी गोबर की खाद पौधे के चारों तरफ मुख्य तने से एक फीट दूरी पर रिंग बनाकर प्रयोग करना चाहिये। यह मात्रा एक वर्ष के पौधे के लिये है, एक साल के पेड़ के लिये संस्तुत मात्रा में पेड़ की उम्र से गुणा करके खाद एवं उर्वरकों की मात्रा को निर्धारित किया जाता है। नवरोपित बागों में जिनमें अभी फलन नहीं लिया जाता है आवश्यकतानुसार हल्की सिंचायी करना श्रेयकर रहता है।

दीमक प्रकोपित बागों में क्लोरपाइरीफास 20 EC@2.0 मिलीलीटर/लीटर पानी की दर से मुख्य तने या उसके आस-पास की मिट्टी में ड्रेंचिंग/ सिंचायी करना चाहिये।

ऐसे तो आम के अधिकतर बागों में बौर आ चुके हैं एवं लीची के बाग में आने वाले हैं लेकिन ऐसे बाग जिसमें निकट भविष्य में फूल आने वाले हों एवं उनमें कीट- रोग की समस्या आर्थिक क्षति स्तर पर हों तो उसमें इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस0 एल0) की 0.3 मिलीलीटर/ लीटर पानी एवं हेक्साकोनाजोल 5% एस0 सी0 की 1.0 मिलीलीटर/लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करने से क्रमशः भुनगा कीट एवं खर्रा रोग के साथ साथ अन्य फफूँद जनित रोगों की उग्रता में कमी आती है।

आम एवं लीची के ऐसे बाग जिनमें बौर आ गये हैं, उनकी लगातार निगरानी करते रहना चाहिये। यदि भुनगा कीट की संख्या 4-5 प्रति बौर पायी जाती है अथवा बौर का मिज या थ्रिप्स प्रकोप दिखायी पड़े तो ही कीटनाशक का प्रयोग करना चाहिये अन्यथा कोई आवश्यकता नहीं होती है। मंजरी के खिल जाने के बाद किसी भी प्रकार का कृषि रसायन का छिड़काव नहीं करना चाहिये, अन्यथा परागण प्रभावित होता है। जैसे ही परागण पूरा हो जाये, फल मटर के दाने के बराबर बन जाये, तुरन्त आवश्यकतानुसार भुनगा, मिज या थ्रिप्स कीट के प्रबन्धन हेतु थायामेथोक्साम 25% डब्लू0 जी0 की 0.3 ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस0 एल0) की 0.3 मिलीलीटर/लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

खर्रा रोग के प्रकोप की दशा में लक्षण दिखायी पड़ते ही हेक्साकोनाजोल 5% एस0 सी0 की 1.0 मिलीलीटर/लीटर या घुलनशील सल्फर 80 डब्लू0 पी0 की 3.0 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करना चाहिये।

जिन बागों में फलों पर मक्खी की समस्या गम्भीर हो वहाँ इसके नियंत्रण के लिये मिथाइल यूजीनाल युक्त फेरोमन ट्रैप (गंधपास) 10-12 ट्रैप / हेक्टेयर की दर से बैग में लटकाना चाहिये। आम एवं लीची के बाग में फूल के खिल जाने के बाद से लेकर फल लग जाने के मध्य सिचायी नहीं करनी चाहिये तथा किसी भी प्रकार के कृषि रसायनों के छिड़काव से बचना चाहिये, अन्यथा नुकसान होने की सम्भावना प्रबल रहती है। फल के लग जाने के बाद फल को झड़ने से बचने के लिये आवश्यक है कि प्लानोफिक्स 1.0 मिली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करना चाहिये। फल लग जाने के बाद बाग़ की मिट्टी में नमी बनाये रखने के लिये नियमित हल्की सिचायी करते रहना चाहिये।

केला

केला का उत्तक सम्वर्धन से लगाया गया पौधा 7-8 महीने का हो गया होगा, अब इसमे हल्की जुतायी-गुड़ायी करने के बाद प्रति पेड़ 200 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करके मिट्टी चढ़ा दे। सूखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को तेज चाकू से समय-समय पर काटते रहना चाहिये। ऐसा करने से रोग की सान्ध्रता भी घटती है एवं रोग का फैलाव भी कम होता है, हवा एवं प्रकाश नीचे तक पहुँचता रहता है जिससे कीटों की संख्या में भी कमी आती है। आवश्यकतानुसार हल्की- हल्की सिचांयीं करना चाहिये।

पपीता

अक्टूबर एवं जुलाई माह में लगाये गये पपीता के पौधों में सर्दी की वजह से पौधे का विकास कम हुआ होगा। इसलिये आवश्यक है कि निरायी-गुड़ायी करें तत्पश्चात प्रति पौधा 100 ग्राम यूरिया, 50 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें। इसके बाद आवश्यकतानुसार हल्की-हल्की सिचांयी करें। पपीता को पपाया रिंग स्पॉट विषाणु रोग से बचाने के लिये आवश्यक है कि 3.0 मिली0/लीटर पानी की दर से नीम आधारित कीटनाशक के घोल, जिसमे 0.5 मिली /लीटर की दर से स्टीकर मिला हो का एक माह के अन्तराल पर आठवें माह तक छिड़काव करना चाहिये। उच्च क्वालिटी के फल हेतु एवं पपीता के पौधों में रोगरोधी गुण पैदा करने के लिये आवश्यक है कि यूरिया 10 ग्राम + जिंक सल्फेट 15 ग्राम + बोरान 10 ग्राम /लीटर पानी में घोलकर एक एक महीने के अन्तर पर छिड़काव आठवे महीने तक करना चाहिये। पपीता की सबसे घातक बीमारी जड़ गलन के प्रबंन्धन के लिये आवश्यक है कि हेक्साकोनाजोल 5% एस. सी. की 2.0 मिली/ लीटर पानी की दर से घोलकर एक- एक महीने के अन्तर पर मिट्टी को खूब अच्छी तरह से भिगा देना चाहिये, यह कार्य आठवे महीने तक करते रहना चाहिये।

महाकपि का बलिदान

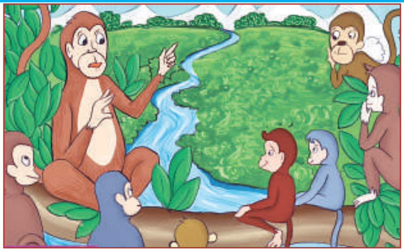

हिमालय के फूल अपनी विशिष्टताओं के लिये सर्वविदित हैं। दुर्भाग्यवश उनकी अनेक प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं। यह कहानी उस समय की है, जब हिमालय का एक अनूठा पेड़ अपने फलीय वैशिष्ट्य के साथ एक निर्जन पहाड़ी नदी के तीर पर स्थित था। उसके फूल बड़े, चेरी से भी अधिक रसीले और आम से भी अधिक मीठे होते थे।

उस पेड़ पर वानरों का एक झुण्ड रहता था, जो बड़ी ही स्वच्छन्दता से रसास्वादन व उपभोग करता था। उन वानरों के राजा महाकपि ने अपनी दूर-दृष्टि उसने समस्त वानरों को सचेत कर रखा था कि उस वृक्ष का कोई भी फल उन टहनियों पर न छोड़ा जाये जिनके नीचे नदी बहती हो। उसके अनुगामी वानरों ने भी उसकी बातों को पूरा महत्व दिया। एक दिन दुर्भाग्यवश उस पेड़ का एक फल पत्तों के बीचों-बीच पक कर टहनी से टूट, बहती हुई उस नदी की धारा में प्रवाहित हो गया।

उन्हीं दिनों उस देश का राजा अपनी औरतों दास-दासीयों तथा के साथ उसी नदी की तीर पर विहार कर रहा था। वह प्रवाहित फल आकर वहीं रुक गया। उस फल की सुगन्ध से राजा की औरतें सम्मोहित हो गयीं। राजा भी उस सुगन्ध से आनन्दित हो उठा। शीघ्र ही उसने अपने आदमी उस सुगन्ध के स्रोत के पीछे दौड़ाये। राजा के आदमी तत्काल उस फल को नदी के तीर पर प्राप्त कर पल भर में राजा के सम्मुख ले आये। फल का परीक्षण कराया गया तो पता चला कि वह एक विषहीन फल था। राजा ने जब उस फल का रसास्वादन किया तो उसके हृदय में वैसे फलों तथा उसके वृक्ष को प्राप्त करने की तीव्र लालसा जगी। क्षण भर में सिपाहियों ने वैसे फलों पेड़ को भी ढूँढ लिया। किन्तु वानरों की उपस्थिति उन्हें वहाँ रास नहीं आयी। तत्काल उन्होंने तीरों से वानरों को मारना प्रारम्भ कर दिया।

वीर्यवान महाकपि ने तब अपने साथियों को बचाने के लिये कूदते हुए उस पेड़ के निकट की एक पहाड़ी पर स्थित एक बेंत की लकड़ी को अपने पैरों से फँसा कर, फिर से उसी पेड़ की टहनी को अपने दोनों हाथों से पकड़ कर लेट अपने साथियों के लिए एक पुल का निर्माण कर लिया। फिर उसने चिल्ला कर अपने साथियों को अपने ऊपर चढ़कर बेतों वाली पहाड़ी पर कूद कर भाग जाने की आज्ञा दी। राजा ने महाकपि के त्याग को बड़े गौर से देखा और सराहा। उसने अपने आदमियों को महाकपि को जिन्दा पकड़ लाने की आज्ञा दी।

उस समय महाकपि की हालत अत्यन्त गम्भीर थी। साथी वानरों द्वारा कुचल जाने के कारण उसका सारा शरीर विदीर्ण हो उठा था। राजा ने उसके उपचार की सारी व्यवस्थता भी करवायी, मगर महाकपि की आँखें हमेशा के लिये बन्द हो चुकी थीं।

बाल-प्रश्नोत्तरी

01. किस देश के उपराष्ट्रपति ने हाल ही में श्रीराममन्दिर के दर्शन किये हैं?
(क) सूरीनाम (ख) हैती
(ग) ब्राजील (घ) गुयाना

02. ललिता पंचमी कब मनायी जाती है?
(क) आश्विन शुक्ल पंचमी
(ख) कार्तिक पूर्णिमा
(ग) चैत्र कृष्ण अष्टमी
(घ) फाल्गुन शुक्ल एकादशी

03. एआई (AI) से स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिये भारत से किस राज्य से किसका पेटेन्ट हुआ?
(क) बंगाल के सुदीप्तो
(ख) असम के अनिरबान
(ग) बिहार के ऋषि दीक्षित
(घ) गुजरात के अश्विन पटेल

04. रंगभरी एकादशी किस नगरी का प्रसिद्ध पर्व है?
(क) लखनऊ (ख) वाराणसी
(ग) अयोध्या (घ) प्रयागराज

05. महाभारत कालीन काम्पिल्य अब कहाँ है?
(क) कानपुर (ख) आगरा
(ग) शामली (घ) फर्रुखाबाद

06. अपना मांस देकर कबूतर की रक्षा किसने की?
(क) राजा शिबी
(ख) राजा मोरध्वज
(ग) राजा परमाल
(घ) राजा शुद्धोधन

07. पंच परिवर्तन के विषय में कौन शामिल नहीं है?
(क) नागरिक कर्तव्य (ख) स्वदेशी
(ग) पर्यावरण संरक्षण (घ) आत्मनिर्भर

08. भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं को हाथियों में कौन-सा हाथी बताया है ?
(क) सुप्रतीक (ख) ऐरावत
(ग) कुवलयापीड़ (घ) अश्वत्थामा

केसरिया आभा निखरी है

अरुणोदय हो रहा गगन में, छायी छटा निराली है।
केसरिया आभा निखरी है, मिटी यामिनी काली है।।

उत्तर से दक्षिण तक सारा, सोया भारत जाग रहा,
बच्चा-बच्चा राम बना है, दानव दल अब भाग रहा;
कहीं न यह फिर से आ जाये, करनी नित रखवाली है।
केसरिया आभा निखरी है, मिटी यामिनी काली है।।

एक साथ सब खड़े हुए हैं, ऊँच-नीच का भेद कहाँ,
सब भारत के भारत सब का, दिखता नहीं विभेद यहाँ;
सबने मिलकर भारत माँ की, सारी विपदा टाली है।
केसरिया आभा निखरी है, मिटी यामिनी काली है।।

उत्तर से नगपति विशाल ने, दुश्मन को ललकारा है,
हिन्दु महोदधि भी दक्षिण से, आज पुनः हुंकारा है;
क्रान्ति-क्रान्ति का राग सुनाती, गंगा भी मतवाली है।
केसरिया आभा निखरी है, मिटी यामिनी काली है।।

कोटि-कोटि वीरों ने इसको, उष्ण रक्त से सींचा है,
ऋषि-मुनियों ने दिव्य ज्ञान का, पावन नीर उलीचा है;
केशव-माधव के उपवन में, फैल रही हरियाली है।
केसरिया आभा निखरी है, मिटी यामिनी काली है।।

उत्तर : 1.(घ), 2.(क), 3.(ग), 4(ख), 5.(घ), 6.(क), 7.(घ), 8.(ख)

फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी-चैत्र कृष्ण एकादशी : विक्रम संवत्-2082

व्रत-पर्व

01 मार्च	प्रदोष व्रत
02 मार्च	होलाष्टक समाप्त, होलिका दहन
03 मार्च	चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, चंद्र ग्रहण, सत्य व्रत
04 मार्च	होली (धुलेण्डी), गणगौर पूजा प्रारंभ, दाऊजी का हुरंगा
05 मार्च	रथ मेला प्रारंभ (रंगजी मन्दिर, वृन्दावन)
06 मार्च	संकष्टी चतुर्थी
07 मार्च	रंग पंचमी
09 मार्च	एकनाथ षष्ठी
10 मार्च	शीतला सप्तमी, नौचन्दी मेला प्रारम्भ, मेरठ
11 मार्च	शीतला अष्टमी, कालाष्टमी
14 मार्च	मीन संक्रांति, पापमोचनी एकादशी
15 मार्च	श्रवण

स्मरणीय तिथियाँ

01 मार्च (पुण्यतिथि)	सोहन लाल द्विवेदी
02 मार्च (पुण्यतिथि)	सरोजिनी नायडू
03 मार्च (जयंती)	रामकृष्ण खत्री
04 मार्च (जयंती)	रामनरेश त्रिपाठी, फणीश्वरनाथ रेणु
04 मार्च (पुण्यतिथि)	लाला हरदयाल
07 मार्च (जयंती)	सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', रामप्रसाद शर्मा 'महर्षि'
07 मार्च (पुण्यतिथि)	गोविन्द बल्लभ पन्त, दयाराम साहनी
08 मार्च (पुण्यतिथि)	रानी कर्णावती
09 मार्च (जयंती)	उस्ताद ज़ाकिर हुसैन
10 मार्च (जयंती)	लल्लन प्रसाद व्यास
10 मार्च (पुण्यतिथि)	सावित्रीबाई फुले
11 मार्च (जयंती)	सुदर्शन साहू (भारतीय मूर्तिकार)
11 मार्च (पुण्यतिथि)	शम्भाजी
12 मार्च (पुण्यतिथि)	डॉ. भगवानदास माहौर
13 मार्च (पुण्यतिथि)	नाना फड़नवीस
14 मार्च (जन्मतिथि)	वैदिक गणितज्ञ भारती कृष्णतीर्थ

पाक्षिक राशिफल

ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी
निदेशक- उत्थान ज्योतिष संस्थान

मेष राशि-
पारिवारिक कार्यों पर खर्च बढ़ेगा। परिवार की उन्नति व व्यापार की उन्नति होगी। सन्तान की प्रगति से मन प्रसन्न रहेगा। अध्ययन अध्यापन में अवरोध उत्पन्न होगा।

वृषभ राशि-
नौकरी के लिए प्रयासरत लोगों को लाभ मिलेगा। क्रोध में वृद्धि होगा। सीने की तकलीफ अर्थात कफ, सर्दी, खांसी, एलर्जी तथा घबराहट में वृद्धि हो सकती है।

मिथुन राशि-
सामाजिक पद प्रतिष्ठा एवं सामाजिक दायरे में वृद्धि होगी। मानसिक चिन्ता में वृद्धि हो सकती है। क्रोध में वृद्धि हो सकती है। अचल संपत्ति का लाभ प्राप्त हो सकता है। शत्रुओं के कारण कार्यों में व्यवधान।

कर्क राशि-
धन लाभ की स्थिति बनेगी। वाणी की तीव्रता में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों को लेकर के मान में तनाव होगा। पराक्रम पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। दाँत एवं आँखों की समस्या।

सिंह राशि-
नौकरी व्यवसाय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता बढ़ेगा। प्रेम सम्बन्धों में अवरोध उत्पन्न होगा। माता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। वाहन चलाते समय ध्यान रखें।

कन्या राशि-
शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगा। स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। दूरस्थ यात्रा के खर्च में वृद्धि होगी। क्रोध एवं झल्लाहट में वृद्धि होगी। आँखों की समस्या पर खर्च बढ़ेगा। भोग विलासिता परखर्च बढ़ेगा।

तुला राशि-
बौद्धिक क्षमता केवल पर आर्थिक प्रगति अच्छी होगी। व्यापारिक गतिविधियों की शुरुआत हो सकती है। कलात्मक क्षेत्र में वृद्धि होगी। प्रेम सम्बन्धों में परिवर्तन हो सकता है।

वृश्चिक राशि-
चल अचल सम्पत्ति का लाभ बढ़ेगा। घर, गाड़ी के सुख में वृद्धि होगी। सरकारी तंत्र से लाभ मिलेगा। मुकदमों में तनाव बढ़ेगा। प्रतियोगिता में विजय प्राप्त होगा।

धनु राशि-
पराक्रम एवं सामाजिक क्षेत्र में वृद्धि होगा। राजनीतिक लाभ मिलेगा। सन्तान के स्वास्थ्य एवं प्रगति को लेकर तनाव बढ़ेगा। अध्ययन अध्यापन में अवरोध होगा। क्रोध एवं झल्लाहट में वृद्धि हो सकती है।

मकर राशि-
पारिवारिक कार्यों में प्रगति होगा। पैर की समस्या के कारण तनाव बढ़ेगा। प्रेम सम्बन्धों में सुधार होगा। जीवनसाथी से मधुरता बढ़ेगी। आँखों की समस्या के कारण तनाव बढ़ेगा। घुटनों में दर्द बढ़ेगा।

कुम्भ राशि-
आर्थिक कार्यों में अच्छी प्रगति होगी। पैतृक सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। क्रोध में वृद्धि होगी। दैनिक रोजगार में प्रगति होगा। जीवन साथी को चोट अथवा ऑपरेशन हो सकता है।

मीन राशि-
भोग विलासिता में वृद्धि होगी। दूरस्थ यात्रा पर खर्च बढ़ेगा। दाम्पत्य जीवन को लेकर तनाव बढ़ेगा। परिश्रम में अवरोध उत्पन्न होगा। आँखों की समस्या के कारण तनाव बढ़ेगा। पेट एवं पैर की समस्या के कारण तनाव बढ़ेगा।

होली में आँखों का रखें विशेष ध्यान

● केमिकल वाले रंग बढ़ा सकते हैं खतरा

लखनऊ। रंगों का त्योहार होली खुशियाँ, उमङ्ग और अपनापन लेकर आता है। हर तरफ गुलाल की खुशबू, हँसी-ठिठोली और रंगों की बौछारें माहौल को उत्सवमय बना देती हैं। लेकिन जरा सी लापरवाही आँखों के लिये भारी पड़ सकती है। बाजार में बिकने वाले कई रंगों में हानिकारक केमिकल (रसायन) मिले होते हैं, जो आँखों की नाजुक परत को नुकसान पहुँचा सकते हैं।

किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) के नेत्र विभाग के डॉक्टर अरुन शर्मा बताते हैं कि होली के बाद इन दिनों आँखों में जलन, लालिमा, सूजन और पानी आने की शिकायतें तेजी से बढ़ जाती हैं। कई मामलों में कॉर्निया (आँख की पारदर्शी परत) में खरोंच तक आ जाती है। यदि समय पर इलाज न मिले तो संक्रमण बढ़ सकता है और इलाज लम्बा चल सकता है।

क्यों खतरनाक हैं केमिकल रंग?

डॉ आरुन के अनुसार सस्ते और मिलावटी रंगों में सीसा, क्रोमियम, काँच का बुरादा और अन्य रासायनिक तत्व मिलाये जाते हैं। ये तत्व आँख में पहुँचते ही जलन और एलर्जी पैदा करते हैं। गीले रंगों में डाले जाने वाले डाई और ऑयल बेस्ड केमिकल आँख की सतह से चिपक जाते हैं, जिससे संक्रमण का खतरा कई गुना बढ़ जाता है।

कई बार लोग रंग छुड़ाने के लिये साबुन या डिटर्जेंट का उपयोग कर लेते हैं, जो स्थिति को और बिगाड़ देता है। आँखों की त्वचा और कॉर्निया बेहद संवेदनशील होते हैं, इसलिये थोड़ी सी लापरवाही भी नुकसानदेह हो सकती है।

आँख में रंग चला जाये तो क्या करें?

अगर खेलते समय रंग आँख में चला जाये तो घबरायें नहीं और आँखों को बिल्कुल न रगड़ें। रगड़ने से कॉर्निया में खरोंच आ सकती है। तुरन्त साफ और ठण्डे पानी से आँखों को अच्छी तरह धो लें। कम से कम 10-15 मिनट तक लगातार पानी डालते रहें ताकि रंग पूरी

तरह निकल जाये।

यदि जलन ज्यादा हो, धुँधला दिखायी दे, आँख खोलने में दिक्कत हो या दर्द बना रहे तो तुरन्त नेत्र विशेषज्ञ से सम्पर्क करें। बिना डॉक्टर की सलाह के कोई भी आई ड्रॉप या घरेलू नुस्खा न अपनायें। कई बार लोग गुलाबजल या कोई भी ड्रॉप डाल लेते हैं, जिससे एलर्जी और बढ़ सकती है।

बच्चों का रखें खास ध्यान

बच्चों की आँखें वयस्कों की तुलना में अधिक संवेदनशील होती हैं। वे खेलते समय सावधानी नहीं बरतते, इसलिये अभिभावकों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। इस बात का ध्यान रखें कि बच्चे सुरक्षित और हर्बल रंगों से ही होली खेलें।

किसी के चेहरे पर जबरदस्ती रंग न डालें और आँखों को बचाकर ही गुलाल लगायें। छोटे बच्चों को पानी वाले रंगों से दूर रखें। यदि बच्चा आँखों में जलन या दर्द की शिकायत करे तो उसे नजरअंदाज न करें।

संक्रमण के लक्षण

आँखों का लाल होना, लगातार पानी आना, चुभन या जलन, धुँधला दिखायी देना, रोशनी से चिढ़, आँख खोलने में तकलीफ

बुजुर्ग और एलर्जी मरीज रखें अतिरिक्त सावधानी

जिन लोगों को पहले से आँखों की एलर्जी, ड्राई आयी या किसी प्रकार की नेत्र समस्या है, उन्हें विशेष सतर्कता बरतनी चाहिये। बुजुर्गों में संक्रमण जल्दी फैल सकता है और ठीक होने में समय लग सकता है। ऐसे लोग भीड़-भाड़ में रंग खेलने से बचें और यदि खेलें तो सुरक्षा उपाय जरूर अपनायें।

रखें विशेष यह सावधानियाँ

डॉ. आरुन के मुताबिक, होली खेलते समय सूखे और प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करें। हर्बल या फूलों से बने रंग अपेक्षाकृत सुरक्षित होते हैं। आँखों के आस-पास हल्का नारियल या सरसों का तेल लगाने से रंग सीधे त्वचा पर नहीं चिपकते और आसानी से साफ हो जाते हैं।

चश्मा पहनने वाले लोग चश्मा लगाकर ही बाहर निकलें। इससे आँखों पर सीधे रंग पड़ने की सम्भावना कम होती है। कॉन्टैक्ट लेंस लगाने वालों को उस दिन लेंस न पहनना ही बेहतर है, क्योंकि रंग लेंस के अन्दर फँसकर संक्रमण का खतरा बढ़ा सकते हैं।

- बहुत तेज प्रेशर वाली पिचकारी का इस्तेमाल आँखों के पास न करें।
- चेहरे पर रंग लगाते समय आँखें बन्द रखें।
- बाइक चलाते समय हेलमेट का वाइजर नीचे रखें।
- रंग खेलते समय बार-बार आँखों को हाथ न लगायें।

प्राकृतिक होली का सन्देश

विशेषज्ञों का कहना है कि होली का असली आनन्द सुरक्षित और सादगीपूर्ण तरीके से मनाने में है। फूलों की होली, सूखे गुलाल और सीमित पानी का उपयोग न केवल आँखों के लिये सुरक्षित है, बल्कि पर्यावरण के लिये भी बेहतर है। होली खुशियों का पर्व है, लेकिन थोड़ी सी समझदारी इसे और सुरक्षित बना सकती है। आँखें हमारे शरीर का अनमोल हिस्सा हैं। रंगों की मस्ती में उनकी सुरक्षा को नजरअन्दाज न करें। सावधानी रखें, सुरक्षित रंग चुनें और जरूरत पड़ने पर तुरन्त डॉक्टर से सलाह लें। तभी यह त्योहार सच मायनों में खुशियों और सेहत का सन्देश देगा। ●